RNI NO. CHHHIN/2012/48749

डाक पंजीयन रायपुर संभाग/36/2014-16

वर्ष : 3 अंक : 4 जनवरी : 2015

★मूल्य : ₹ 20 एवं डाक खर्च अतिरिक्त

समवेत सृजन

ईमेल : samvet.srijan@gmail.com वेबसाइट : www.samvetsrijan.com

हिंदी मासिक पत्रिका

शहरों में भाजपा को झटका

गणतंत्र की आस

गणतंत्र दिवस, हर भारतीय का त्यौहार है, जो उनकी व्यक्तिगत पहचान को राष्ट्रीय पहचान से जोड़ता है। मैं छत्तीसगढ़ के उन ढाई करोड़ लोगों को साधुवाद देता हूं, जिन्हें अपने नाम से ज्यादा इस बात की चाह है कि उनका योगदान प्रदेश और देश के नव निर्माण में दर्ज हो।

अपने अथक परिश्रम से छत्तीसगढ़ को तीसरी बार कृषि कर्मण सहित दर्जनों राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाने वाले

जन-जन को नमन....

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री,
छत्तीसगढ़

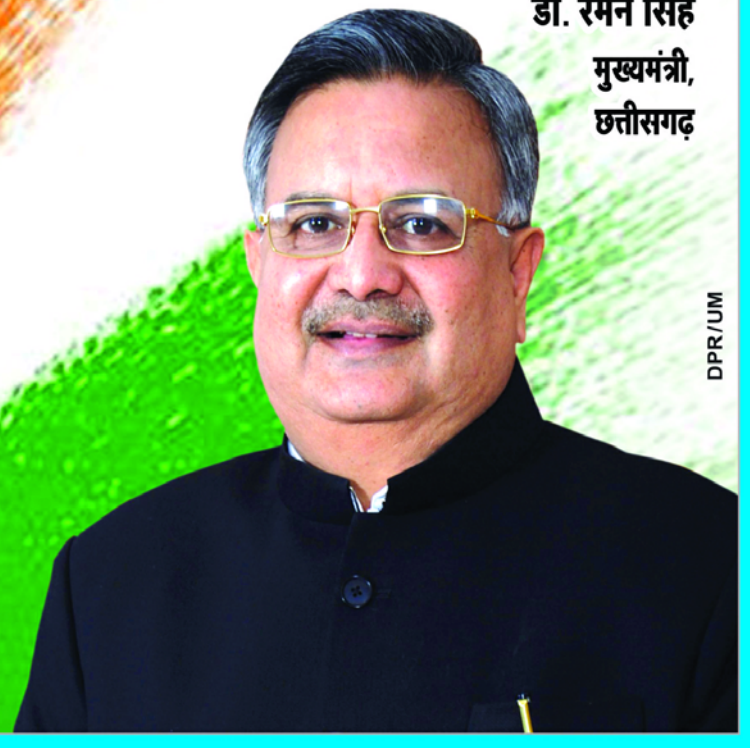

सबके साथ सबका विकास

DPR/UM

समवेत सृजन
हिंदी मासिक पत्रिका

वर्ष : 3 अंक-4
जनवरी : 2015

:: संपादक ::
श्रीमती अरुन्धति भोई

:: छत्तीसगढ़ कार्यालय ::
E-78, सेक्टर 2, देवेंद्र नगर,
रायपुर (छग.)

संवाददाता
बिलासपुर - रवि शुक्ला
रायगढ़ - पुनीराम रजक
पाटन - डॉ. ललित जायसवाल
भाटापारा-बलौदाबाजार - अरुण छाबड़ा
बलौदाबाजार - दिलीप माहेश्वरी
जांजगीर - रोहित मिश्रा
कोरबा - आकाश शर्मा
दुर्ग-भिलाई - रमेश गुप्ता
पिथौरा - राजेंद्र सिन्हा
सक्ती - अमित अग्रवाल
कांकेर - भरत यादव
कवर्धा - संजू गुप्ता
राजिम-नवापारा - राजेंद्र ठाकुर

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती अरुन्धति भोई द्वारा E-78-79, सेक्टर 2, देवेंद्र नगर, रायपुर से प्रकाशित एवं युगबोध डिजिटल प्रिंटर्स, 6, समता कॉलोनी, कृष्णा टॉकीज रोड, रायपुर से मुद्रित।

0 पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री में सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है, उसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं है।
0 सभी विवादों का निबटारा रायपुर की सक्षम अदालत में किया जाएगा।

आप अपनी रचनाएं एवं सुझाव हमें
इस पते पर मेल कर सकते हैं
हमारा ई-मेल आईडी
samvet.srijan@gmail.com

:: वेबसाइट ::
www.samvetsrijan.com

इस अंक में

12 झारखण्ड का मुखिया छत्तीसगढ़िया

21 ⇨ दंभ ले डूबा राजपक्षे को

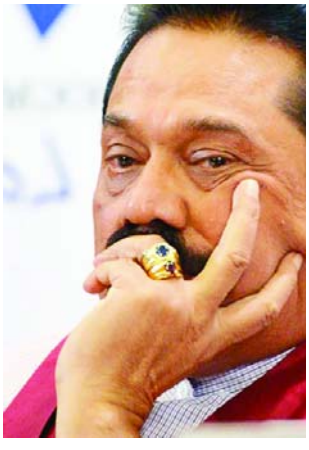

संपादकीय	04
कही-सुनी	05
शहरों में भाजपा का झटका	07
किरण-केजरी में जंग	12
कांग्रेस के दुर्दिन	15
सम सामयिक	23
विविध	24
व्यंग्य	27
क्रिकेट	29
बॉलीवुड	31
इन्वेस्टमेंट	32

जरा नहीं हिचकिचाए रणवीर-अनुष्का 31

संपादकीय

महिला शक्ति की शान

भारत का 66 वां गणतंत्र दिवस कई मायनों में अहम रहा। गणतंत्र समारोह के बहाने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी ताकत भी दिखाई और चेहरा भी पेश किया। एक तो समारोह के मुख्य अतिथि अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा थे। विश्व के ताकतवर देश के मुखिया बराक ओमाबा खुले आसमान के नीचे दो घंटे तक बैठे रहे और भारत की ताकत को निहारते रहे। इस गणतंत्र में राष्ट्र की महिला शक्ति उभरकर सामने आई, जो अपने आप में भारत के लिए ऐतिहासिक और गर्व करने की बात है। गणतंत्र दिवस परेड में सेना के तीनों अंगों (थल, वायु व नौ सेना) की महिला टुकड़ियों ने न केवल पहली बार हिस्सा लिया, बल्कि कई टुकड़ियों का नेतृत्व भी किया। झाकियों के जरिए मोदी सरकार ने अपनी उपलब्धियों को पेश किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह पहला गणतंत्र दिवस समारोह था। पहली बार में ही मोदी ने देश-दुनिया को अपनी ताकत व सोच बता दिया। मेक इन इंडिया, जन-धन, बेटी बचाओ से लेकर बस्तर दशहरा 26 जनवरी परेड के हिस्सा बने। मोदी ने बता दिया कि सही मायने में भारत कुलांचे भरने लगा। भारत अभी विश्व के कई देशों के लिए बड़ा बाजार है। इसमें अमेरिका, चीन से लेकर कई देश शामिल है। कई यूरोपीय देश अभी मंदी के मार से गुजर रहे हैं, ऐसे में ओबामा का भारत आना अमेरिका व भारत दोनों के लिए फायदेमंद है। वैसे भी जब भी केंद्र में भाजपा के नेतृत्ववाली सरकार रही है भारत-अमेरिका के रिश्ते मजबूत हुए हैं। वर्तमान स्थिति में भारत व अमेरिका को एक-दूसरे के निकट आना और दोस्ती बढ़ाना जरूरी व मजबूरी भी है। रूस अपनी नीतियों के कारण अलग-थलग पड़ता जा रहा, फिर वहां मंदी की गंभीर स्थिति है। लेकिन भारत को संभल के चलना होगा। अमेरिका भारत को केवल प्लेटफार्म की तरह इस्तेमाल न कर पाए। अब तक अमेरिका पाकिस्तान के प्रति सहानुभूति रखता रहा, लेकिन पहली बार अमरीकी राष्ट्रपति भारत आए और पाकिस्तान नहीं गए। इसका साफसंकेत है कि अमेरिका अब भारत को ज्यादा अहमियत देने लगा है। भारत की इस सफलता से चीन व पाकिस्तान दोनों की भोंहें तन गई हैं। ऐसे भारत को पड़ोसियों को साधने के साथ विकास भी तेज करना होगा। वैसे भी भारत इतना बड़ा बाजार बन गया है कि चीन या कोई दूसरा देश उसे नजरअंदाज नहीं कर सकता। अमेरिकी राष्ट्रपति की यात्रा से हिन्दुस्तान की शान बढ़ी है। इससे भी ज्यादा गणतंत्र दिवस परेड़ में महिला शक्ति के प्रदर्शन से देश का गौरव बढ़ा है। अब हम उम्मीद करे हैं कि हिन्दुस्तान नई सोच के साथ विकास के साथ आगे बढ़ेगा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नारा सबका साथ सबका विकास सफल होगा।

अरुन्धती भोई

पथरी का इलाज
लिथोट्रिप्सी
रायपुर स्टोन क्लिनिक में जर्मनी से आयातित अत्याधुनिक सर्वश्रेष्ठ डारनियर लिथोट्रिप्सी मशीन द्वारा किडनी(गुर्दे), यूरेटर(पेशाब नली), पेशाब थैली(ब्लेडर), पित्तनली पेनक्रियाज, ग्रंथी की पथरी का इलाज बगैर ऑपरेशन, भर्ती बेहोशी, चीरफाड़ के उपलब्ध पूरे-उपचार का रियायती दरों का पैकेज भी उपलब्ध।
शासकीय कर्मचारियों एवं बीपीएल, स्मार्ट कार्ड धारी हेतु मान्यता प्राप्त।
रायपुर स्टोन क्लिनिक
कचहरी चौक, रायपुर(छ.ग.)
फोन: 0771-4214812
मो. 094252-03688
Rajesh 9425208899

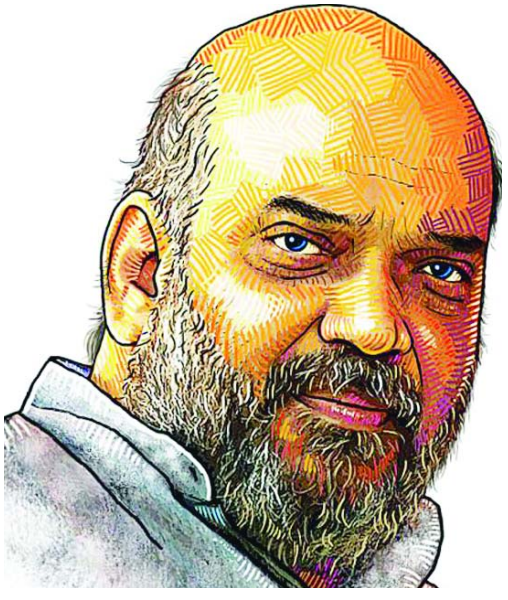

अब क्या करेंगे अमित शाह ?

12 दिसंबर *को बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह रायपुर आए थे, तब उन्होंने सबको चेतावनी दी थी कि नगरीय निकाय चुनाव में हार होने पर वे किसी को नहीं बख्शेंगे। शहरों की पार्टी माने जाने वाली भाजपा 2013 के विधानसभा चुनाव में भी शहरों में मात खा गई थी और अब 2014 के नगरीय निकाय चुनाव में भी शहरी सत्ता में उसका प्रदर्शन आशातीत नहीं रहा। सबसे बड़ा झटका तो रायपुर में लगा। कांग्रेस के महापौर किरणमयी नायक के खिलाफ जनता का गुस्सा होने के बावजूद भाजपा सीट नहीं निकाल पाई। साथ ही कद्दावर मंत्री बृजमोहन अग्रवाल के चुनाव संचालक रहते पार्टी की भद्द पिट गई। वहीं मंत्री बृजमोहन व राजेश मूणत दोनों के इलाके में बीजेपी की हार कई संदेह को जन्म देता है। कहा तो यह भी जा रहा है कि दोनों मंत्रियों ने प्रमोद दुबे के 2013 के एहसान का बदला चुकाया। अब देखना होगा कि अमित शाह क्या करते हैं? उनकी चेतावनी कार्रवाई में बदलती है या फिर केवल गीदड़ भभकी साबित होती हैं।*

जोगी के बुरे दिन

लगता *है पूर्व मुख्यमंत्री अजित जोगी के दिन अच्छे नहीं चल रहे है। पत्नी रेणु जोगी को न तो नेता प्रतिपक्ष नहीं बनवा सके, और न ही प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष। फिर महासमुंद से लोकसभा चुनाव हार गए। चुनावी रणनीति में माहिर जोगी के पराजय की उम्मीद किसी को नहीं थी। अब नगरीय निकाय चुनाव में उनके प्रचार से दूरी बनाने के बाद भी कांग्रेस की सीटें बढ़ गई। 2000-2001 में उनके खास समर्थक रहे भूपेश बघेल अब उनके खास दुश्मन बन गए। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बघेल ने कई जोगी समर्थकों के टिकट काट दिए, इससे गुस्साए जोगी चुनाव प्रचार से दूरी बनाकर बघेल पर वार का इंतजार में थे, लेकिन नगरीय निकाय चुनाव में कांग्रेस की सफलता से जोगी को वार का मौका ही नहीं मिला। अब जोगी के साथ खिसयानी बिल्ली खंबा नोचे वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।*

एक करोड़ की मेयर टिकट

चर्चा है कि कांग्रेस के एक बड़े नेता ने अपने इलाके में मेयर के टिकट दिलाने के लिए अपने समर्थक से एक करोड़ रूपए लिए। इस चर्चा में कितना दम है, यह अलग बात है, लेकिन लोकसभा चुनाव जहां कांग्रेस प्रत्याशी को करीब 20 हजार वोट कम मिले थे, वहीं से कांग्रेस का महापौर चुनाव तीन हजार वोटों से जीत गया। मजेदार बात तो यह है कि यहां कांग्रेस का बागी भी मैदान में था, उसे 24 हजार से अधिक वोट मिले, इसके बावजूद जीत किसी चमत्कार से कम नहीं है। विजयी महापौर का संबंध एक राजनेता से है, राजनेता का अनुभव व रणनीति का कोई कैसे मुकाबला कर सकता था? हल्ला तो यह भी है कि कांग्रेस नेता ने आखिरी दिनों में भाजपा के पार्षद प्रत्याशियों को भी मैनेज कर लिया था।

उपासने का चैप्टर क्लोज

***एक** बार विधानसभा और अबकी बार महापौर का चुनाव हारने के बाद सच्चिदानंद उपासने का भाजपा में चैप्टर क्लोज होना तय माना जा रहा है। 2013 का विधानसभा टिकट नहीं मिलने से नाराज उपासने समर्थकों ने बीजेपी दफ्तर में हंगामा किया था। इसके बाद भी पार्टी ने उन्हें महापौर का कैन्डिडेट बनाया। इसके पीछे भी बड़ा खेल हुआ। एक तो उपासने संघ से जुड़े हैं, दूसरे संजय श्रीवास्तव को बृजमोहन व मूणत नहीं चाहते थे। सुनील सोनी को संगठन देना नहीं चाहते थे, सोनी को टिकट दिलाने के लिए बृजमोहन ने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया था। याने आपसी लड़ाई का फायदा उपासने को मिला था, लेकिन उसका फायदा उठा नहीं पाए और चुनाव हार गए। भाजपा में चर्चा होने लगी है कि उपासने अब कभी चुनाव जीत नहीं सकते?*

मधु को चंदा भी मिला और वोट भी

***प्रदेश** में नगरीय निकाय चुनावों में सबसे ज्यादा चौंकाने वाला परिणाम रायगढ़ नगर निगम के आए हैं जहां से थर्ड जेंडर मधु किन्नर चुनाव जीत गई हैं। मधु किन्नर ने प्रचार में ज्यादा तामझाम नहीं किया और उनके समर्थन में कोई स्टार प्रचारक भी नहीं आया। लेकिन फिर भी उन्होंने कांग्रेस व भाजपा को धूल चटा दी। मधु के प्रचार में थर्ड जेंडर समुदाय से भी लोग नहीं जुटे। पैसे की कमी थी लिहाजा बैन पोस्टर व विज्ञापन भी शहर में नहीं दिखा। गली मोहल्लों में लोगों को दुआ देने और आशीर्वाद लेने के भरोसे प्रचार चलता रहा और नतीजे मधु के पक्ष में आए। उन्होंने लोगों से वोट के रूप में आशीर्वाद मांगा ऐसे में यह मान्यता बन गई कि किन्नर को खुले हाथों से देना चाहिए। लोगों ने दान भी दिया और बैनर पोस्टर भी बनवाए। मधु को वहां से भी वोट मिले हैं जहां वह प्रचार के लिए नहीं पहुंच पाईं।*

शहरों में भाजपा को झटका

नगरीय निकाय चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की हार नए राजनीतिक परिदृश्य की ओर इशारा कर रही है। शहरी चुनाव में जीत से कांग्रेस नेता गद्‌गद्‌ हो गए हैं और भाजपा के सामने ताल ठोक रहे हैं। शहरी संग्राम पीसीसी अध्यक्ष भूपेश बघेल के लिए अग्नि परीक्षा जैसा था। अध्यक्ष बनने के बाद उनके नेतृत्व में यह पहला चुनाव था, वहीं अजीत जोगी के बगावती तेवर के बाद भी बेहतर प्रदर्शन कर उन्होंने अपना लोहा मनवा लिया। इस जीत से कांग्रेस के भीतर जोगी का कद घटा है। साथ ही कांग्रेस कार्यकर्ताओं में संदेश भी गया कि जोगी के बिना भी चुनाव जीता जा सकता है। शहरी संग्राम में भाजपा को नुकसान एक बड़े राजनीतिक बदलाव की ओर इंगित करता है। वैसे भी भाजपा को शहरी लोगों की पार्टी ही माना जाता है। फरवरी में पंचायत चुनाव होने वाले हैं ऐसे में उसे मंथन व चिंतन की जरूरत है। कहा जा रहा है कि भाजपा को राशन कार्ड और धान का समर्थन मूल्य ले डूबा। वहीं अंदरूनी गुटबाजी भी हार का एक बड़ा कारण बना। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की चेतावनी भी काम नहीं आई। अब भाजपा के भीतर बड़े बदलाव के संकेत हैं।

छत्तीसगढ़ के नगरीय निकाय चुनाव में कांग्रेस ने चार शहरों में मेयर की सीट जीतकर राज्य की सत्ताधारी भाजपा को करारा झटका दिया है। मेयर पद के लिए दस सीटों पर हुए चुनाव में भाजपा को चार स्थानों पर जीत मिली है। इस बार खास बात यह थी कि छत्तीसगढ़ में पहली बार रायगढ़ से एक किन्नर प्रत्याशी ने भाजपा कांग्रेस को मात देते हुए जीत दर्ज की है।

इसके अलावा कांग्रेस के बागी डमरूधर रेड्डी ने चिरमिरी से मैदान मारा है। राजधानी रायपुर से कांग्रेस के प्रमोद दुबे ने शानदार जीत दर्ज की है, जबकि सर्वाधिक लीड के साथ राजनांदगांव से भाजपा के मधुसूदन यादव जीते हैं। नगर पालिका के चुनाव में कांग्रेस को १६, भाजपा को 16 और 7 सीटें निर्दलीय व अन्य को मिली हैं।

इसी तरह पंचायतों में कांग्रेस को 50 भाजपा 37 और निर्दलीय व अन्य 18 नगर पंचायत के अध्यक्ष चुने गए हैं। नगर निगम, पालिका और नगर पंचायतों के समूचे नतीजों के बाद बनी तस्वीर में साफ दिखाई दे रहा है कि कांग्रेस ने भाजपा को बैकफुट पर धकेल दिया है।

कांग्रेस यहां से जीती

रायपुर नगर निगम में कांग्रेस के महापौर उम्मीदवार प्रमोद दुबे ने भाजपा के सच्चिदानंद उपासने को हराया। जगदलपुर नगर निगम में कांग्रेस जतिन जायसवाल ने भाजपा के योगेंद्र कौशिक को पराजित किया। अंबिकापुर नगर निगम में कांग्रेस के अजय तिर्की ने भाजपा की मंजूषा भगत को हराया। कोरबा नगर निगम में कांग्रेस की रेणु अग्रवाल विजयी रहीं। उन्होंने भाजपा की कांति दुबे को शिकस्त दी।

भाजपा यहां से विजयी

राजनांदगांव नगर निगम में भाजपा के मधुसूदन यादव ने कांग्रेस के विजय पांडेय को लगभग 35 हजार वोटों से हराया। बिलासपुर नगर निगम में भाजपा के महापौर प्रत्याशी किशोर राय चुनाव जीत गए हैं। पहली बार नगर निगम बने धमतरी में भाजपा की अर्चना चौबे ने कांग्रेस उम्मीदवार डॉ. सरिता दोशी को पराजित कर दिया। दुर्ग में भाजपा की चंद्रिका चंद्राकर ने कांग्रेस की नीलू ठाकुर को हराया।

आदिवासी इलाकों में भाजपा की हार, मैदानी इलाके में मुकाबला

छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्रों के नगर निगम में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। मैदानी इलाकों दुर्ग, राजनांदगांव, बिलासपुर और धमतरी में भाजपा का पलड़ा भारी रहा। यहां सिर्फ एक सीट रायपुर नगर निगम में कांग्रेस को जीत मिली है।

गृहमंत्री रामसेवक पैकरा सरगुजा संभाग के चुनाव प्रभारी थे। यहां के दोनों नगर निगम अंबिकापुर और चिरमिरी में पार्टी को हार का सामना करना पड़ा। रायगढ़ सांसद विष्णुदेव साय केंद्रीय मंत्री हैं, लेकिन यहां महापौर पद के लिए निर्दलीय प्रत्याशी को जीत मिली है। इन तीनों नगर निगम में पिछले चुनाव में भाजपा को जीत मिली थी।

रायगढ़, अंबिकापुर और चिरमिरी में मिली हार को भाजपा संगठन मंत्री रामसेवक पैकरा और विष्णुदेव साय की कमजोरी के रूप में देख रहे हैं। वहीं बस्तर से आदिवासी मंत्री केदार कश्यप के क्षेत्र की जगदलपुर नगर निगम में भी भाजपा को हार का सामना करना पड़ा। यहां भी पिछले चुनाव में भाजपा को जीत मिली थी। भाजपा के उच्च पदस्थ सूत्रों के अनुसार आदिवासी क्षेत्रों के नगर निगम में हार को संगठन ने गंभीरता से लिया है। मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने इन स्थानों पर रोड शो और सभा भी की थी।

नगरीय निकाय चुनाव

रायपुर

प्रमोद दुबे
कांग्रेस

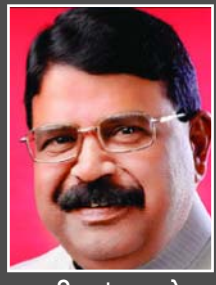

सच्चिदानंद उपासने
भाजपा

भाजपा की अंदरूनी गुटबाजी का फायदा मिला, साथ ही भाजपा प्रत्याशी सच्चिदानंद उपासने के मुकाबले तेजतर्रार नेता की छवि काम आई। इनके सामने सबसे बड़ी चुनौती सफाई की है। रायपुर में पिछले 6 महीने से जगह-जगह गंदगी के ढेर दिखाई पड़ रहे हैं।

दुर्ग

चंद्रिका चंद्राकर
भाजपा

नीलू ठाकुर
कांग्रेस

नीलू ठाकुर को जितवाने के लिए दुर्ग के विधायक अरुण वोरा ने पूरी ताकत लगाई लेकिन सरोज पांडेय भारी पड़ गईं। यहां पर भाजपा का असंतुष्ट खेमा सक्रिय रहा। लेकिन बाजी चंद्रिका चंद्राकर मार ले गईं। चंद्रिका के सामने सबसे बड़ी चुनौती सरोज और हेमचंद यादव को साथ लेकर चलने की है।

राजनांदगांव

मधुसूदन यादव
भाजपा

विजय पांडेय
कांग्रेस

मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह और उनके सांसद बेटे अभिषेक सिंह की प्रतिष्ठा दांव पर थी। दोनों ने जोर लगाया, यहां पर भाजपा के कई असंतुष्टों के बाद भी मधुसूदन यादव रिकॉर्ड मतों से जीते। इसका श्रेय अभिषेक सिंह को जाता है। कांग्रेस के विजय पांडेय एक बार निर्दलीय महापौर रह चुके हैं लेकिन रमन सिंह की रणनीति के सामने उन्हें घुटने टेकने पड़े।

धमतरी

अर्चना चौबे
भाजपा

सरिता दोशी
कांग्रेस

धमतरी में कांग्रेस प्रत्याशी सरिता दोशी को उनकी पुरानी छवि ले डूबी। इसके अलावा यहां पर पंचायत मंत्री अजय चंद्राकर ने ऐड़ी-चोटी का जोर लगाया। कांग्रेस यहां पर बंटी हुई नजर आई। इसका फायदा भी बीजेपी की अर्चना चौबे को मिला।

जगदलपुर

जतिन जायसवाल
कांग्रेस

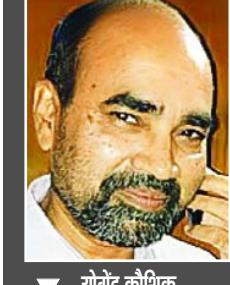

योगेंद्र कौशिक
भाजपा

जगदलपुर में कांग्रेस भाजपा के मुकाबले एकजुट होकर लड़ी। इसके अलावा भाजपा प्रत्याशी योगेंद्र कौशिक के मुकाबले कांग्रेस के जतिन जायसवाल का चेहरा साफ-सुथरा होने का लाभ कांग्रेस को मिला। भाजपा के पिछले महापौर की कार्यशैली भी भाजपा को ले डूबी।

कोरबा

रेणु अग्रवाल
कांग्रेस

डॉ. हरिकांता दुबे
भाजपा

कोरबा में महापौर चुनाव मैनेजमेंट पर टिका रहा। विधायक जयसिंह अग्रवाल ने अपनी पत्नी रेणु अग्रवाल को जिताने में कामयाब रहे। इससे चरणदास महंत का कद काफी कुछ बढ़ा है। ब्राह्मण वोट बंटने के कारण भाजपा की डॉ. हरिकांता दुबे को नुकसान उठाना पड़ा, वहीं यहां भाजपा बंटी हुई दिखी।

बिलासपुर

किशोर राय
भाजपा

रामशरण यादव
कांग्रेस

स्वास्थ्य मंत्री अमर अग्रवाल अपने बलबूते किशोर राय को जितवाने में कामयाब हो गए और नसबंदी कांड को लेकर उन पर लगे आरोपों का उन्होंने जवाब भी दे दिया। यहां पर कांग्रेस शुरू से बंटी हुई थी। भूपेश बघेल और अजीत जोगी की लड़ाई में कांग्रेस प्रत्याशी रामशरण यादव का पत्ता साफ हो गया।

अंबिकापुर

डॉ. अजय तिर्की
कांग्रेस

मंजूषा भगत
भाजपा

भाजपा प्रत्याशी मंजूषा भगत शुरू से ही डॉ. अजय तिर्की के मुकाबले कमजोर प्रत्याशी मानी जा रही थीं। डॉ. तिर्की की साफ-सुथरी छवि के सामने मंजूषा टिक नहीं पाईं। वहीं नेता प्रतिपक्ष टी.एस. सिंहदेव की प्रतिष्ठा भी दांव पर लगी हुई थी। सिंहदेव ने तिर्की को जितवाकर सरगुजा में अपनी अहमियत साबित कर दी।

रायगढ़

मधु
निर्दलीय

महावीर चौहान
भाजपा

भाजपा की अंदरूनी गुटबाजी के चलते यहां पर किन्नर मधु को जीत मिली। कहा जा रहा है मधु भाजपा के एक पूर्व विधायक की समर्थित प्रत्याशी थीं। वर्तमान विधायक को मात देने के लिए यह चाल चली गई। कांग्रेस का प्रत्याशी शुरू से ही कमजोर माना जा रहा था वहीं पुराने महापौर की कार्यशैली से भी कांग्रेस नुकसान हुआ।

चिरमिरी

डमरूधर रेड्डी
निर्दलीय

संजय सिंह
भाजपा

भाजपा के बागी के रूप में डमरूधर रेड्डी चुनाव लड़े और विजयी रहे। कहा जा रहा है कि डमरूधर रेड्डी की पकड़ माइंस के कर्मचारियों में जबरदस्त थी, इसका उन्हें फायदा मिला। कांग्रेस का यहां कोई खास प्रभाव नहीं होने से भी निर्दलीय को फायदा मिल गया। रेड्डी के सामने अब चिरमिरी के विकास की बड़ी चुनौती है।

भाजपा को दो निगमों का नुकसान कांग्रेस को एक में बढ़त

2009 के नगरीय चुनाव के मुकाबले भाजपा को छह नगर निगमों में मिली हार के साथ ही दो सीटों के नुकसान का सामना करना पड़ा है। पिछले चुनाव में जगदलपुर, अंबिकापुर, चिरमिरी, रायगढ़ और कोरबा में जीत मिली थी। लेकिन इस बार हार का सामना करना पड़ा है। बिलासपुर में पिछला चुनाव हारने वाली भाजपा ने जीत के साथ वापसी की है। मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह के निर्वाचन क्षेत्र राजनांदगांव में जहां 2009 में कांग्रेस का कब्जा था। वहां भाजपा ने जीत दर्ज की है। वहीं दुर्ग में पिछले चुनाव में भाजपा का कब्जा था। इस बार भी भाजपा यहां जीतने में सफल रही है। धमतरी में पहली बार हुए नगर निगम चुनाव में भाजपा का परचम लहराया है। यहां से कांग्रेस ने जगदलपुर, अंबिकापुर और कोरबा में जीत हासिल करने के साथ ही राजधानी रायपुर पर अपना कब्जा बरकरार रखा है। लेकिन राजनांदगांव और बिलासपुर में 2009 मिली जीत कायम नहीं रख पाई। रायगढ़ और चिरमिरी में कांग्रेस और भाजपा दोनों निर्दलियों ने पटखनी दी। रायगढ़ में जीतने वाली मधु किन्नर छत्तीसगढ़ पहली थर्ड जेंडर महापौर होंगी। इसी तरह चिरमिरी में कांग्रेस के बागी डमरू रेड्डी ने कांग्रेस सहित भाजपा को करारी शिकस्त दी है।

अब करेंगे संगठन में सुधार : रमन

मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने नगरीय निकाय चुनाव के नतीजों पर कहा है कि लोकतंत्र में जनादेश सर्वोपरि होता है और इन चुनावों में जनता ने जो भी निर्णय दिया है, उसका सम्मान और स्वागत किया जाना चाहिए। उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में यह भी कहा कि हम पूरी ईमानदारी से इन नतीजों की समीक्षा करेंगे और कमियों को दूर करने के लिए संगठन के स्तर पर सभी सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि शहरों के विकास के लिए राज्य सरकार अपनी विभिन्न योजनाओं के तहत सभी नगरीय निकायों को अपना भरपूर सहयोग देगी। मुख्यमंत्री ने अपनी त्वरित प्रतिक्रिया में कहा कि ये नतीजे हमारी अपेक्षा के अनुरूप नहीं है, लेकिन नगर निगमों में महापौरों के चुनाव में कांग्रेस और भाजपा दोनों बराबरी पर हैं। गहराई में जाएं तो 10 में से 8 नगर निगमों में भाजपा के पार्षदों को बढ़त मिली है। इसी तरह नगर पालिकाओं में भी 16 अध्यक्ष भाजपा के और 16 अध्यक्ष कांग्रेस निर्वाचित हुए हैं। रायपुर नगर निगम में सर्वाधिक 37 पार्षद भाजपा के चुने गए हैं। अधिकांश नगरीय निकायों में पार्षदों के चुनाव में भाजपा को बढ़त मिली है। मुख्यमंत्री ने कहा कि चुनाव नतीजों का संगठन में पूरा विश्लेषण किया जाएगा और तभी पता चल पाएगा कि कहां कौन से मुद्दे प्रभावी रहे। मुख्यमंत्री ने नगर निगमों, नगर पालिकाओं तथा नगर पंचायतों के सभी विजयी महापौरों, अध्यक्षों और विजयी पार्षदों को बधाई दी।

सक्ती नगर पालिका में कांग्रेस रही एकजुट

सक्ती नगर पालिका चुनाव में पहली बार कांग्रेस के नेता एकजुट होकर चुनाव लड़े और इसी का परिणाम है कि श्याम किशोर अग्रवाल भारी मतों से चुनाव जीते। वैसे तो सक्ती में अजीत जोगी और चरणदास महंत का गुट है। अब भूपेश बघेल का भी खेमा तैयार हो गया। शहरी चुनाव में अजीत जोगी ने अपने समर्थकों को दूरी बनाए रखने के निर्देश दिए थे लेकिन सक्ती में जोगी समर्थकों ने भी कांग्रेस प्रत्याशी श्याम किशोर के पक्ष में प्रचार किया और वोट मांगे। श्याम किशोर अग्रवाल एक पत्रकार होने के नाते सभी से संबंध बनाए हुए थे, वहीं हर गुट के लोगों से उनका व्यक्तिगत संबंध था। इसका उन्हें फायदा मिला। सक्ती नगर पालिका में पिछली बार निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर नरेश गेवाडीन अध्यक्ष पद का चुनाव जीते थे। इस बार उन्होंने पार्षद का चुनाव लड़ा लेकिन जीत नहीं पाए। केवल 420 वोट उनके खाते में आए।

सक्ती में भारतीय जनता पार्टी का प्रभाव है लेकिन श्याम किशोर अग्रवाल की उम्मीदवारी से भाजपा से जुड़े कई लोग भी उनके पक्ष में आ गए और अंदरूनी तौर पर काम किया। दो साल पहले यहां सड़क चौड़ीकरण के नाम पर कई लोगों के वर्षों पुराने मकान तोड़ दिए गए थे। भाजपा की तरफ से कोई राहत उन्हें दिलाई नहीं जा सकी। उसका भी नुकसान भाजपा का उठाना पड़ा। इसके अलावा राशन कार्ड का मुद्दा भाजपा के लिए भारी पड़ गया।

किरण-केजरी में जंग

पिछले दिनों दिल्ली में हुई नरेंद्र मोदी की रैली और केजरीवाल के पलटवार से मचे घमसान को चुनाव आयोग ने और भी रोमांचक कर दिया है। आयोग ने दिल्ली चुनाव पर बने सस्पेंस से पर्दा उठाते हुए सात फरवरी की तारीख मुकर्रर की है। चुनाव के नतीजे 10 फरवरी को घोषित हो जाएंगे। चुनाव तारीख की घोषणा के साथ ही राजधानी में आचार संहिता लागू हो गई है। मुख्य चुनाव आयुक्त वीएस संपत ने तारीखों की घोषणा की।

दिल्ली में करीबन 1.3 करोड़ मतदाता हैं जो 11,000 बूथों पर मताधिकार का प्रयोग करेंगे. पहली बार मताधिकार का का इस्तेमाल करने वाले वोटरों की संख्या 1,72,450 है। आयोग लोगों के घरों तक फोटो वोटर स्लिप भी पहुंचाएगी जिससे उन्हें वोट डालने में सुविधा हो।

आप पार्टी 'दिल्ली डायलाग' के चुनावों से काफी पहले से ही जनता के बीच अपना प्रचार-प्रसार कर रही है। इन सभाओं में केजरीवाल कुर्सी छोड़ने के लिए कई बार माफी भी मान चुके हैं। अलग अलग मुद्दे पर डायलॉग कर 'आप' जनता में कम हुई साख को वापस पाने की कोशिश कर रही है। चुनावी तैयारी में एक कदम आगे रहने के लिए 'आप' ने पहले ही अपने सभी 70 उम्मीदवारों के नाम की घोषणा कर दी है। भाजपा भी हरियाणा चुनाव के बाद से मंडल स्तर पर लोगों से जुड़ने की कवायद शुरू कर चुकी है। दिसंबर में सदस्यता अभियान के जरिए भाजपा ने अपना पूरा जोर लगा दिया है। हालांकि अब तक पार्टी द्वारा उम्मीदवारों की कोई घोषणा नहीं की गई है। अमित शाह ने पहले ही पार्टी के नेताओं को टिकट के लिए किसी भी तरह की गुटबाजी से दूर रहने की सलाह दे दी है। 10 जनवरी को प्रधानमंत्री मोदी की रैली के जरिए पार्टी ने अपने अभियान का औपचारिक ऐलान कर दिया है।

कांग्रेस की तरफ से अरविंदर सिंह लवली अकेले कमान संभाले हुए हैं। अब तक पार्टी 24 उम्मीदवारों का नाम जारी कर चुकी है। इनमें से 12 को पिछले चुनाव में भी टिकट मिले थे। अरविंदर सिंह लवली, हारून यूसुफ व ओखला के विधायक आसिफ मोहम्मद का नाम इस लिस्ट में शामिल है। मटियामहल से पांच बार विधायक रह चुके शोएब इकबाल कांग्रेस में शामिल हुए थे पार्टी ने उन्हें भी टिकट दिया है।

पिछले विधान सभा चुनाव में भाजपा जादुई आंकडे से सिर्फ चार सीट दूर रह गई थी। दूसरी तरफ क्रांति की गोद से निकली केजरीवाल की 'आप' ने इतिहास रचते हुए 28 सीटों पर परचम लहराया था। कांग्रेस के समर्थन से 49 दिन तक सरकार चलाने के बाद केजरीवाल ने 14 फरवरी को इस्तीफा दे दिया था। उसके बाद 17 फरवरी से दिल्ली में राष्ट्रपति शासन चल रहा था।

राजनीतिक पार्टियां तैयार

दिल्ली विधानसभा अगर भाजपा के लिए नाक की लड़ाई है तो आप के लिए यह मूंछ बचाने की जद्दोजहद। थकी-थकी सी दिख रही दिल्ली कांग्रेस के लिए भी यह साख बचाने का मौका है। भाजपा और आप पार्टी ने एक दूसरे पर सीधा प्रहार कर के चुनावों को द्विपक्षीय बना दिया है।

आप का भूत भाजपा पर हावी

“

बात साल भर पहले की ही तो है। जैसे-जैसे नतीजे आते जा रहे थे, भीड़ बढ़ती जा रही थी। कनॉट प्लेस के पास हनुमान मंदिर के पीछे के उस बंगले की बालकनी की रौनक कुछ अलग थी। जैसे ही आम आदमी पार्टी कोई विधानसभा सीट जीतती और नेता बालकनी से इसका ऐलान करते, नीचे समर्थकों में जबरदस्त जोश आ जाता था। अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली नौसिखुआ आम आदमी पार्टी (आप) ने अंतत: 28 सीटें और 29 फीसदी वोट हासिल करके न केवल दिल्ली में 15 साल से शासन कर रही कांग्रेस को बेदखल कर दिया बल्कि मुख्य विपक्षी दल बीजेपी को भी सत्ता के बिल्कुल मुहाने पर अटका दिया।

”

तब से राजनैतिक परिदृश्य में नाटकीय बदलाव आ चुका है। आप ने दिल्ली में 49 दिन तक सत्ता संभाली। उसके बाद लंबा समय राष्ट्रपति शासन का रहा। इस दौरान नरेंद्र मोदी की बीजेपी ने केंद्र में सत्ता कब्जा ली और दिल्ली की भी सातों लोकसभा सीटों पर जीत हासिल की। अब यह महानगर-राज्य 7 फरवरी को विधानसभा चुनावों के अगले दौर के लिए तैयार हो रहा है. ऐसे में एक बात जस की तस है- केजरीवाल अब भी बड़ी ताकत हैं। यह बात न केवल कई सारे सर्वेक्षणों से जाहिर होती है जिनमें वे मुख्यमंत्री पद के लिए पहली पसंद बनकर लगातार उभर रहे हैं, बल्कि यह हकीकत इस बात से भी सामने आती है कि खुद प्रधानमंत्री मोदी ने 10 जनवरी को रामलीला मैदान की रैली में उन्हें बीजेपी के सबसे प्रमुख प्रतिद्वंद्वी की हैसियत से नवाजा। आम चुनावों में दिल्ली के 70 में से 60 विधानसभा क्षेत्रों में बीजेपी को बढ़त मिली थी। हालात को पलटने के लिए केजरीवाल आप को उसकी एनजीओ/ एक्टिविस्ट जड़ों से परे ले जाकर एक मजबूत ढांचे वाली पार्टी में तब्दील कर रहे हैं।

पार्टी ने महसूस किया कि उसने आम चुनाव में

बीजेपी की दिल्ली इकाई इस बात को लेकर भ्रमित थी कि दिल्ली में जोड़-तोड़ से सरकार बनाई जाए या नहीं, वहीं बीजेपी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने राष्ट्रपति शासन रहते दिल्ली के लिए कई सारे कदमों का ऐलान किया। बाकी लोगों के अलावा राजनाथ सिंह, एम. वेंकैया नायडू, नितिन गडकरी और पीयूष गोयल सरीखे केंद्रीय मंत्री भी दिल्ली के चुनावों पर निगाह रखते हुए राजधानी में शिलान्यास करते या गंभीर मुद्दों पर राय रखते नजर आए। जाहिर था कि बीजेपी की दिल्ली इकाई को केंद्रीय शहरी विकास मंत्री नायडू और ऊर्जा मंत्री गोयल का रामलीला मैदान की रैली को संबोधित करके

केंद्रीय नियंत्रण

दिल्ली के विकास के केंद्र में सरकार के योगदान को गिनाना उपयुक्त ही लगा।

इस बीच उपाध्याय की छवि को लगे तेज झटके के अगले ही दिन पार्टी में पूर्व आइपीएस किरण बेदी की पैराशूट लैंडिंग हो गई। अरुण जेटली और अमित शाह की मौजूदगी में वे पार्टी में आईं और उसी दिन मोदी से भी मिल लीं. उन्हें तुरंत मुख्यमंत्री उम्मीदवार के तौर पर देखा जाने लगा। वैसे भी पिछली बार मुख्यमंत्री के रूप में उसका चेहरा हर्षवर्धन अब केंद्र में मंत्री हैं और विधानसभा चुनावों की दौड़ तक में शामिल नहीं हैं। स्मृति ईरानी, विजय गोयल, दिल्ली बीजेपी के प्रमुख सतीश उपाध्याय के बारे में भी चर्चा कर ली जाती है। लेकिन कुछ भी पुख्ता नहीं है। ऐसे में केजरीवाल अपने नाम और वादे निभाने को लेकर बनी पहचान के चलते रेस में आगे बने हुए हैं।

अपनी चादर से बाहर पांव फैलाने की गलती की थी। इसी वजह से उसने इस दरम्यान अन्य राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में उतरने से भी परहेज किया. आप की राष्ट्रीय प्रवक्ता आतिशी मर्लेना ने कहा, 'लोकसभा चुनावों के बाद से पार्टी ने विभिन्न स्तरों—पोलिंग बूथ, मतदान केंद्र, वार्ड, विधानसभा क्षेत्र और जिला स्तर पर एक खास चुनाव-संबंधी ढांचा खड़ा किया है।' बाकी राजनैतिक दलों के नक्शेकदम पर चलते हुए आम आदमी पार्टी ने भी अपने महिला और युवा संगठन खड़े कर लिए हैं।

केजरीवाल ने मोदी के लोकसभा चुनाव प्रचार के भी एक गुर को हथिया लिया है। पार्टी के रणनीतिकारों का कहना है कि केजरीवाल ने रामलीला मैदान में मोदी की रैली से पहले ही दिल्ली में 50 विधानसभा-स्तर की जनसभाओं को संबोधित कर लिया था।

केजरीवाल को एक यह भी फायदा हासिल है कि जहां मोदी सुरक्षा के तामझाम के कारण सिर्फ बड़ी सभाएं कर सकते हैं, वहीं केजरीवाल गली-मुहल्ले में उपलब्ध हैं। आप के वरिष्ठ नेता ऐसी जनसभाओं को लगभग रोजाना संबोधित कर रहे हैं।

पार्टी सूत्रों का कहना है कि उनका लक्ष्य मतदान के दिन तक हर विधानसभा क्षेत्र में 8-10 जनसभाएं कर लेने का है। लिहाजा हाल के चार विधानसभा चुनावों में बीजेपी के ज्वार के बावजूद दिल्ली में आप को खासी उम्मीद है। आप के वरिष्ठ नेता योगेंद्र यादव कहते हैं, 'अन्य राज्यों में बीजेपी का सामना धूमिल छवि वाली तत्कालीन सरकारों से था और सामने कोई लोकप्रिय चेहरा नहीं था, लेकिन दिल्ली में यह स्थिति नहीं है।'

आप की नई ढांचागत मजबूती के लिए स्वयंसेवी सहयोग और सोशल मीडिया में सक्रियता की भरपूर मदद ली जा रही है। आप के लिए अतीत में भी यह फायदेमंद रहा है। पार्टी सूत्रों का कहना है कि दिल्ली में प्रचार के लिए उन्हें देशभर से पांच से दस हजार कार्यकर्ताओं के दिल्ली में जुटने की उम्मीद है। यह संख्या में भले ही उससे कम हो जो 2013 के विधानसभा चुनावों के वक्त पार्टी ने जुटा लिए थे, लेकिन इस बार वे चुनावी प्रक्रिया से ज्यादा बेहतर वाकिफ होंगे। ये कार्यकर्ता पहले ही आप के सोशल मीडिया अभियान को जमकर हवा दे रहे हैं, ताकि एक माहौल कायम हो सके और साथ ही वे नुक्कड़ नाटकों और फ्लैश मॉब अभियान की भी पूरी मदद ले रहे हैं।

पार्टी ने बीजेपी को चकमा देते हुए समूची दिल्ली में खास नजर आने वाली 80 जगहों पर केजरीवाल के होर्डिंग तान दिए। इससे कम होर्डिंग के बावजूद आप की मौजूदगी बीजेपी जैसी दिख रही है। केजरीवाल ने पार्टी के चुनाव अभियान के लिए मुंबई, बेंगलूरू और दुबई में संसाधन जुटाने वाले बहु-प्रचारित कार्यक्रम आयोजित किए. लेकिन साथ ही साथ विधानसभा क्षेत्र के स्तर पर भी संसाधन जुटाने के कार्यक्रम चल रहे हैं।

इस कोशिश से न केवल पैसा जुटेगा बल्कि उस मध्य वर्ग का समर्थन भी मिलेगा जिसके बारे में यह कहा जा रहा था कि वह आप से छिटक कर दूर चला गया है। केजरीवाल पहले ही ऐसे 13 कार्यक्रमों में शिरकत कर चुके हैं। हालांकि मध्य वर्ग को लेकर अनिश्चितता यकीनन पार्टी को थोड़ा परेशान किए हुए है लेकिन उसे यह उम्मीद भी है कि कांग्रेस के प्रति घटता उत्साह आप को मुसलमानों के भी ज्यादातर वोट दिला देगा।

कांग्रेस के दुर्दिन

राहुल गांधी की कांग्रेस अपने किए को नहीं भुना पाती और नरेंद्र मोदी के कहे पर वोटों का अंबार लग जाता है। तभी तो उस दिल्ली में जहां अपने लगातार 15 साल के कार्यकाल में कांग्रेस ने विकास के सारे पहलू छू लिए, वहां कभी केजरीवाल का भ्रष्टाचार का नारा तो कभी मोदी का विकास का नारा कांग्रेसियों को मूक दर्शक बना देता है। इसी हाल में लोकसभा चुनाव की करारी हार के बाद 13 जनवरी को कांग्रेस कार्यसमिति की दूसरी बैठक चल रही थी, तभी पार्टी मुख्यालय 24 अकबर रोड के सामने से एक स्कूल बस गुजरी। बस में बैठे छात्रों ने कांग्रेस दफ्तर की तरफ उंगली दिखाते हुए तंज कसा: ''तुम्हें तो अब कोई वोट नहीं देगा।''

विडंबना यह है कि ठीक उसी वक्त कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी कार्यसमिति के सदस्यों से कह रहे थे कि वे कांग्रेस और उसकी विचारधारा की तरफ वोटरों को आकर्षित करने के तरीके खोजें। स्कूल के वे छात्र जरूर उनके दिमाग में रहे होंगे, क्योंकि वे चाहते थे कि कांग्रेस युवा, शहरी हिंदुस्तानियों की आकांक्षाओं को तवज्जो दे। लेकिन राहुल के लिए आगे का रास्ता कतई आसान नहीं है, क्योंकि पार्टी में जान फूंकने की उनकी योजना की कामयाबी इस बात पर टिकी है कि उनमें पार्टी दिग्गजों से अपनी योजना को मनवा लेने का कितना जज्बा और काबिलियत है। 2013 के दिल्ली विधानसभा चुनावों के बाद उन्होंने जिन ''अकल्पनीय सुधारों'' का वादा किया था, उन्हें लाने की कोशिश में राहुल पार्टी संविधान में कुछ संशोधन करना चाहते हैं, ताकि संगठन के ढांचे में बदलाव किए जा सकें. मिसाल के लिए, आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए वे ठेठ ब्लॉक कांग्रेस सदस्यों को लेकर एक मतदाता मंडल बनाना चाहते हैं। इन्हें राज्य अध्यक्षों के चुनाव में भी अपनी बात कहने का हक होगा। राज्यों में निर्णय प्रक्रिया फिलहाल मुख्यमंत्री और तीन-चार मंत्रियों के हाथों में कैद है। राहुल चाहते हैं कि इसे विकेंद्रीकृत करके जमीनी कार्यकर्ता की बात भी फैसलों में सुनी जाए। एक और प्रस्ताव यह है कि ऑनलाइन सदस्यता की इजाजत दें और सक्रिय सदस्यता की व्यवस्था दोबारा लागू करें। साथ ही सदस्यता शुल्क को मौजूदा 5 रु. से बढ़ा दिया जाए, ताकि फर्जी सदस्य बनाने वाले नेता बाज आएं और पार्टी का कुछ भला हो।

इन विचारों पर सैद्धांतिक तौर पर किसी को एतराज नहीं है। लेकिन पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी सहित कई वरिष्ठ

नेता विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया को संवैधानिक मंजूरी देने की बात को अभी तक गले नहीं उतार पाए हैं। उनके मुताबिक निचले दर्जे के कार्यकर्ताओं को ताकतवर बनाने का काम विचार और भावना के स्तर पर होना चाहिए, लेकिन संस्था के ढांचे में इसे लागू करने का नतीजा पार्टी में बिखराव की शक्ल में सामने आ सकता है। पार्टी के एक महासचिव कहते हैं, ''इन विचारों में नया क्या है? कांग्रेस को दूसरी पार्टियों के नक्शे-कदम पर चलकर नहीं, बल्कि खुद अपने दम-खम के बूते पर अपना रास्ता बनाना होगा। राहुल गांधी ने जब कहा था कि कांग्रेस आम आदमी पार्टी से सबक लेगी, तब यह उनकी भीषण भूल थी।'' दूसरी ओर कांग्रेस महासचिव दिग्विजय सिंह कहते हैं, ''हमारे संगठन के चुनाव नियमित रूप से होते हैं और कांग्रेस अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष कोई भी फैसला लेने से पहले हमेशा पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से चर्चा करते हैं। लेकिन राहुल गांधी ज्यादा लोकतंत्र और विकेंद्रीकरण चाहते हैं।'' कई युवा नेताओं की राय में, राहुल को आशंका है कि जैसे ही वे आमूलचूल बदलावों के साथ आगे बढ़ेंगे, वैसे ही उन्हें पार्टी के दिग्गजों की जबरदस्त प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ेगा, इसीलिए वे राजनीति से उनके थककर चूर होने का इंतजार कर रहे हैं। पार्टी उपाध्यक्ष के एक करीबी सहयोगी कहते हैं, ''यह लंबी प्रक्रिया है और ईमानदारी से कहूं तो हमें इस प्रयोग की कामयाबी पर केवल 50 फीसदी ही भरोसा है। किसी भी स्तर पर अगर कोई गड़बड़ हुई तो ठीकरा राहुल के सिर पर ही फूटेगा।'' अलबत्ता कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक तकरीबन साढ़े चार घंटे चली और संकेत यह था कि पार्टी के शीर्ष पद पर राहुल का विराजमान होना अब महज एक

पिछले छह माह में कांग्रेस उपाध्यक्ष ने अपने बंगले पर 400 से ज्यादा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ मुलाकात की और ज्यादातर से यही जानना चाहा कि पार्टी में जान फूंकने के लिए क्या करना चाहिए। वे उनसे सात-आठ लोगों के समूहों में मिले। मुलाकात से एक घंटा पहले पिछली बैठकों में मिले सुझावों का परचा उन्हें थमा दिया जाता था और खुद अपनी राय के अलावा इन पर भी उनके विचार मांगे जाते थे।

औपचारिकता मात्र है। क्योंकि बैठक में जिन बातों की चर्चा हुई, वे सभी उस बैकग्राउंड पेपर के इर्द-गिर्द घूमती थीं, जो कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ राहुल के विचार-विमर्शों पर या भूमि अधिग्रहण और किसानों के अधिकारों सरीखे उनके पसंदीदा मुद्दों पर आधारित था। एक युवा सांसद ने कहा, ''मेरी बात पर गौर करना, जुलाई तक राहुल गांधी कांग्रेस अध्यक्ष बन जाएंगे।'' दिग्विजय सिंह के मुताबिक, राहुल अगर जल्दी नहीं तो अक्तूबर तक तो अध्यक्ष बन ही जाएंगे।

पिछले छह माह में कांग्रेस उपाध्यक्ष ने अपने बंगले पर 400 से ज्यादा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ मुलाकात की और ज्यादातर से यही जानना चाहा कि पार्टी में जान फूंकने के लिए क्या करना चाहिए। वे उनसे सात-आठ लोगों के समूहों में मिले। मुलाकात से एक घंटा पहले पिछली बैठकों में मिले सुझावों का परचा उन्हें थमा दिया जाता था और खुद अपनी राय के अलावा इन पर भी उनके विचार मांगे जाते थे। 24 दिसंबर को उन्होंने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआइसीसी) के महासचिवों के साथ एक मैराथन बैठक की और उन्हें निर्देश दिए कि वे पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ उनके विचार-मंथन के बाद तैयार बैकग्राउंड पेपर पर जिला और ब्लॉक स्तर पर फीडबैक हासिल करें और दो महीनों के भीतर रिपोर्ट पेश करें। चार दिन बाद, इसी पेपर के आधार पर सोनिया गांधी ने राज्य अध्यक्षों को एक खर्रा भेजकर कहा कि प्रदेश कांग्रेस कमिटी (पीसीसी) प्रमुख राज्य और जिला स्तरों पर छोटे-छोटे समूहों में चर्चाएं आयोजित करके

विचारधारा, संगठनात्मक सुधारों और आगे के रास्ते के बारे में विचार इकट्ठा करें. पीसीसी प्रमुखों को अपनी रिपोर्ट 28 फरवरी तक भेजनी है, ताकि मार्च में संभावित ''अगले एआइसीसी सत्र में चर्चा और अनुमोदन्य'' के लिए कार्रवाई के एजेंडे को अंतिम रूप दिया जा सके।

राहुल खेमा वरिष्ठों के संदेहों को खारिज करते हुए कहता है कि उनकी कार्य योजना के असली ब्योरों को देखना चाहिए। राहुल के एक करीबी सहयोगी कहते हैं, ''हम विकेंद्रीकरण की बात कर रहे हैं, इसका मतलब है कि सत्ता महासचिवों, मुख्यमंत्रियों या पीसीसी प्रमुखों के हाथों में केंद्रित नहीं रहेगी। लेकिन हम सत्ता किसे दे रहे हैं? पहले तो हमें जिम्मेदारी के साथ सत्ता का इस्तेमाल करने वाले पार्टी कार्यकर्ताओं का निर्माण और उन्हें शिक्षित करना पड़ेगा। यही सबसे बड़ी चुनौती है. इसीलिए हम सदस्यता की प्रक्रिया पर फोकस कर रहे हैं और मतदाता मंडल बना रहे हैं।''

कांग्रेस सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया यह कहते हुए राहुल के बचाव में कूद पड़ते हैं कि पार्टी के पुनर्निर्माण को लेकर राहुल गांधी की दृष्टि बिल्कुल साफ है. वे कहते हैं, ''समस्याओं को वे अच्छी तरह समझते हैं, उनके पास साफ रणनीति भी है, अगले कुछ महीनों में आप इसका खुलासा और अमल होते देखेंगे।''

संगठनात्मक सुधारों के अलावा सरकार को घेरने में अपनाई गई रणनीति पर भी राहुल की छाप दिखाई दी। कार्यसमिति ने तय किया कि नरेंद्र मोदी सरकार का मुकाबला करने के लिए जमीन अधिग्रहण एवं कोयला खदानों पर अध्यादेश लाने, किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य तथा मनरेगा, खाद्य सुरक्षा कानून, वन अधिकार कानून एवं स्व-सहायता समूह संस्थाओं जैसी कल्याण योजनाओं को कमजोर करने के खिलाफ

सड़कों पर आंदोलन और विरोध प्रदर्शन कांग्रेस की रणनीति का हिस्सा होंगे, यह युवा कांग्रेस के अध्यक्ष के चयन से भी जाहिर है।राहुल के एक करीबी सहयोगी के मुताबिक पंजाब के विधायक अमरिंदर सिंह राजा बरार को सड़कों पर लड़ने की उनकी काबिलियत और भाषण-कला की वजह से युवा शाखा का मुखिया बनाया गया है। लेकिन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता इन विरोध प्रदर्शनों की आलोचना कर रहे हैं। उनका कहना है कि राहुल यह सब पहले भी आजमाकर देख चुके हैं लेकिन कुछ हासिल नहीं हुआ।

देशव्यापी विरोध प्रदर्शन किए जाएंगे। इसके फौरन बाद पार्टी नेता जयराम रमेश ने जमीन अधिग्रहण अध्यादेश को लेकर मोदी सरकार के ऊपर तीखा हमला बोल दिया। कांग्रेस का कहना है कि मोदी सरकार द्वारा लागू अध्यादेश ने किसानों से वे अधिकार छीन लिए हैं, जो यूपीए 2 सरकार ने उन्हें 2013 में भूमि अधिग्रहण, बहाली और पुनर्वास कानून बनाकर दिए थे।

कांग्रेस कार्यसमिति के एक सदस्य कहते हैं, ''आप शहरी युवाओं को रिझाना चाहते हैं और अभी भी समाजवाद और किसानों के अधिकारों की रट में फंसे हुए हैं।''

एक आलोचना यह भी है कि एनजीओ के प्रभुत्व वाले मुद्दों पर राहुल के फोकस की वजह से पार्टी के लिए आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। एक महासचिव कहते हैं, ''राहुल के गैर-सियासी सलाहकार, जो या तो सामाजिक सुधारों के महान विचारों से ओत-प्रोत अकादमिक हैं या सामाजिक कार्यकर्ता, न केवल वोट जुटाने में नाकाम रहे बल्कि उन्होंने कॉर्पोरेट जगत को भी पार्टी से दूर धकेल दिया है। हम घोर संकट का सामना कर रहे हैं.'' चर्चा है कि पार्टी बैंकों के ओवरड्राफ्ट पर भारी-भरकम ब्याज अदा कर रही है. हालांकि राहुल के समर्थक कहते हैं कि वे अपने विचारों को लेकर अडियल नहीं है और सुधार करने के लिए तैयार हैं. सबूत के तौर पर वे बताते हैं कि उनके द्वारा शुरू की गई युवा कांग्रेस की चुनाव प्रक्रिया की नाकामी को उन्होंने कबूल किया था.

अलबत्ता राहुल की कार्यशैली पर

झारखण्ड का मुखिया छत्तीसगढ़िया

“

छत्तीसगढ़ की माटी से जुड़े रघुवर दास झारखण्ड के पहले गैर आदिवासी मुख्यमंत्री हैं। मजदूर से सत्ता की ऊंची कुर्सी तक पहुंचने वाले रघुवर के कंधे पर अब झारखण्ड को विकास के पंख लगाने होंगे। विकास के नारे पर ही वहां भाजपा सत्ता में आई है। राज्य बनने के 14 साल बाद झारखण्ड को एक दलीय सरकार मिली है। उम्मीद है कि भाजपा वहां एक स्थिर सरकार की नींव मजबूत करेगी। एक विधायक की सरकार तक झारखण्ड में बन चुकी है। भ्रष्टाचार व कई तरह की बदनामियों से घिरे इस आदिवासी राज्य में छत्तीसगढ़ की तरह नक्सल समस्या विकराल है।

”

रघुवर दास ने रविवार को झारखंड के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। वे राज्य के 10वें मुख्यमंत्री हैं। मोरहाबादी स्थित बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम में हजारों लोगों की भीड़ के बीच राज्यपाल डॉ. सैयद अहमद ने उन्हें शपथ दिलाई। मुख्यमंत्री के साथ चार मंत्रियों नीलकंठ मुंडा, सीपी सिंह, चंद्रप्रकाश चौधरी और लुईस मरांडी ने भी शपथ ली।

शपथ ग्रहण के बाद मुख्यमंत्री ने कैबिनेट की बैठक बुलाई, जिसमें 10 महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। उन्होंने कहा कि वे झारखंड का दास बनकर काम करेंगे। राज्य में कानून का राज होगा । विकास में बाधक अधिकारी दंडित होंगे। अगले पांच साल में झारखंड को महाराष्ट्र की तरह विकसित राज्यों की श्रेणी में खड़ा कर देंगे। उन्होंने कहा कि राज्य में हर स्तर पर सफाई की जरूरत है। ताकि वर्षों से गरीब, आदिवासी, अल्पसंख्यक व अन्य वर्गों को विकास का लाभ मिल सके, जो अब तक नहीं मिला है।

मजदूर से मुख्यमंत्री की कुर्सी

परिवार के साथ रघुवर।

रोजी-रोटी की तलाश में लगभग 70 साल पहले रघुवर दास के पिता चमन राम (दिवंगत) तत्कालीन मध्य देश (वर्तमान में छत्तीसगढ़) के जिला पाथरी, गांव बइरडीह से जमशेदपुर गए थे। उस समय जमशेदपुर एक औद्योगिक नगर के रूप में विकसित हो रहा था। यहां टाटा से जुड़ी कई कंपनियां स्थापित हो रही थीं। इन कंपनियों को मजदूरों की तलाश रहती थी। उस दौरान मध्य देश (अब मध्यप्रदेश) का यह इलाका काफी पिछड़ा था। कंपनियों के एजेंट मध्य देश और बिहार मजदूरों की तलाश में जाते थे।

चवन राम 40 के दशक में पत्नी व तीन पुत्रियों प्रेमवती, महारिन व बेदूबाई के साथ जमशेदपुर गए थे। उस वक्त जमशेदपुर आने के लिए एकमात्र टाटा-नागपुर पैसेंजर ट्रेन चलती थी। इस ट्रेन का परिचालन आज भी हो रहा है।

नौकरी देने के साथ-साथ छत्तीसगढ़ से आने वाले लोगों को बसाने के लिए टिस्को (अब टाटा स्टील) की जमीन उपलब्ध कराई थी। टाटा स्टील में मजदूर के रूप में रघुवर के पिता काम करने लगे। कंपनी की ओर से भालूबासा में जमीन दी गई, जिस पर उन्होंने मकान बनाया। भालूबासा हरिजन स्कूल के पीछे लाइन नंबर तीन में मकान नंबर-89 आज भी है। इस घर में रघुवर दास के छोटे भाई मूलचंद परिवार के साथ रह रहे हैं। इसी घर में रहते हुए 3 मई 1955 को रघुवर दास व अन्य दो पुत्र मूलचंद और जगदेश का जन्म हुआ था। इसी घर से 11 मार्च 1978 को रघुवर की शादी रुक्मिणी देवी से हुई। यहीं से रघुवर ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की थी। 1995 में विधायक बनने के बाद वे एग्रिको स्थित आवास में रहने आ गए।

विज्ञान में स्नातक करने के बाद नवंबर 1987 में रघुवर ने टाटा स्टील में एक सामान्य मजदूर के रूप में काम शुरू किया। वे भाजपा में भी कार्यकर्ता के रूप में काम करते रहे। उन्होंने पार्टी में अपनी मेहनत से पहचान बनाई। इसकी बदौलत वे सीतारामडेरा मंडल अध्यक्ष, फिर महानगर जमशेदपुर के जिला भाजपा महामंत्री और बाद में उपाध्यक्ष बनाए गए। जमशेदपुर पूर्वी से पांचवीं बार विधायक बने रघुवर दास राज्य के 10वें मुख्यमंत्री होंगे।

अभी भी टाटा स्टील में हूं मजदूर

मीडिया से बात करते हुए रघुवर दास ने कहा की वे अभी भी टाटा स्टील में मजदूर हैं और काफी वक्त से बिना वेतन लिए छुट्टी पर चल रहे हैं। अब वे रिटायरमेंट लेने की सोच रहे हैं।

शपथ लेते ही फैसले

1- जवाबदेह प्रशासन होगा। उत्तरदायित्व का निर्धारण करते हुए जनता को समयबद्ध सेवा दी जाएगी।

2- डीसी स्तर के अधिकारी प्रखंड स्तर पर जाकर योजनाओं की समीक्षा और मॉनिटरिंग करेंगे।

3- विधि व्यवस्था बनाए रखने के लिए अधिकारियों को अपराधियों से सख्ती से निपटने के निर्देश।

4- विभिन्न विभागों में रिक्त पदों की सूची उपलब्ध कराने का निर्देश। अगली कैबिनेट में होगा विचार।

5- विभागों में जन शिकायत कोषांग बनेगा। जरूरत के मुताबिक कर्मी नियुक्त होंगे।

6- विकास कार्य भ्रष्टाचारमुक्त कराने पर भी कैबिनेट ने लगाई मुहर।

7- सामाजिक सुरक्षा पेंशन का दायरा बढ़ेगा। सभी उम्र की विधवाओं को पेंशन देने का फैसला।

8- छोटे-मोटे अपराध के लिए जेल में बंद गरीबों, आदिवासियों को राहत मिलेगी। जिलावार सूची मांगी।

9- तीन महीने के भीतर राशन कार्ड का वितरण होगा। बीपीएल सूची नए सिरे से बनाने के भी निर्देश।

10- कैबिनेट की अगली बैठक राज्य की उपराजधानी दुमका में बुलाई जाएगी।

डॉ. रमन ने दी बधाई

झारखंड के नये मुख्यमंत्री रघुवर दास के शपथ ग्रहण समारोह में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह शामिल हुए और उन्हें बधाई दी। डॉ. रमन सिंह ने कहा कि श्री रघुवर दास का छत्तीसगढ़ से वर्षों पुराना पारिवारिक नाता है। इस नाते छत्तीसगढ़ के लोगों के लिए भी यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है।

हर ओर सिर्फ उमंग, उल्लास और जोश

रांची का मोरहाबादी फुटबॉल ग्राउंड ऐतिहासिक शपथ ग्रहण समारोह का गवाह बना। यहां उमंग, उल्लास का नजारा दिखा। समारोह में शामिल होने के लिए झारखंड के कोने-कोने से भाजपा के कार्यकर्ता पहुंचे थे। पूरा मोरहाबादी इलाका भाजपा और आजसू के झंडों से पटा हुआ था। समर्थक अपनी गाड़ियों में दोनों दलों के झंडा टांगे हुए थे। फुटबॉल ग्राउंड के सभी प्रवेश द्वार पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बड़े-बड़े कटआउट लगे हुए थे। जिलों से आए कार्यकर्ता इतने उत्साह में थे कि वे निर्धारित जगह पर बैठने के बदले मंच के करीब पहुंचना चाह रहे थे। इस वजह से अफरा-तफरी का माहौल रहा।

दंभ ले डूबा राजपक्षे को

जब 9 जनवरी की सुबह श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे को लगा कि वे चुनाव हार रहे हैं तो उन्होंने 3,00,000 सैनिकों वाली अपनी मजबूत सेना का सहारा लेने की कोशिश की। विदेश मंत्री मंगल समरवीरा की ओर से 14 जनवरी को कोलंबो पुलिस में दर्ज शिकायत के अनुसार, इसका मकसद मतगणना को बाधित करना और इमरजेंसी घोषित करना था।

खबरों के मुताबिक, उनकी कोशिश नाकाम रही, क्योंकि सेना ने सहयोग करने से इनकार कर दिया। कुछ घंटे बाद राष्ट्रपति ने दोस्त से दुश्मन बने मैत्रीपाल सिरिसेना के सामने हार स्वीकार करते हुए अपने टेंपल ट्रीज निवास को छोड़ दिया।

पिछले नवंबर में जब उनकी लोकप्रियता गिरनी शुरू हुई थी, तब भी उन्हें अपराजेय माना जा रहा था। उनके सामने कमजोर और बंटा हुआ विपक्ष था. श्रीलंका में सत्ता के सभी प्रमुख पदों पर उनका ही परिवार काबिज था। श्रीलंका पर करीब एक दशक तक राज करने वाले 69 वर्षीय राजपक्षे ने कमजोर सुप्रीम कोर्ट का सहारा लेकर 2010 के विवादित संशोधन पर अनुमोदन हासिल कर लिया, जिससे उन्हें तीसरी बार राष्ट्रपति चुनाव में खड़े होने की इजाजत मिल गई।

8 जनवरी के चुनाव निर्धारित समय से दो साल पहले ही करा लिए गए। इसके बाद राजनैतिक आंधी, जिसे राजपक्षे की पूर्व नेता और बाद में विरोधी बनीं चंद्रिका कुमारतुंगा ने बड़ी चतुराई से गुप्त बनाए रखा था, ने एक अनपेक्षित विरोधी को सामने खड़ा कर दिया। राजपक्षे के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सिरिसेना ने सभी को चौंकाते हुए 9 जनवरी को राजपक्षे को मात दे दी। 21 नवंबर को अपनी उम्मीदवारी की घोषणा करते हुए सिरिसेना ने कहा था, 'पूरी अर्थव्यवस्था और समाज के हर पहलू पर सिर्फ एक परिवार का कब्जा है।'

इससे ठीक एक दिन पहले रात को उन्होंने कोलंबो में टेंपल ट्रीज निवास

आसान नहीं है सिरिसेना की राह

श्रीलंका के नए राष्ट्रपति सिरिसेना ने अपने सबसे करीबी और सबसे ज्यादा ताकतवर पड़ोसी भारत के साथ राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक संबंध बहाल करने के लिए कारोबारी तरह से मिशन शुरू किया, पर देश के भीतर उन्हें तमाम चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने दो पूर्व कुशल कूटनयिकों को महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया है, जिसका मकसद अल्पसंख्यकों को खुश करने के साथ भारत का विश्वास जीतना भी है। यूएन के पूर्व अंडर सेक्रेटरी रहे जयंत धनपाल को जहां विदेशी मामलों पर राष्ट्रपति का सलाहकार नियुक्त किया गया, वहीं सेवानिवृत्त विदेश सचिव एच.एम.जी.एस. पालीहक्कारा को तमिल बहुल उत्तरी प्रांत का गवर्नर बनाया गया। ये नियुक्तियां बहुसंख्यक सिंहली समुदाय के उन पेशेवर और प्रतिष्ठित अधिकारियों को महत्व देने की कोशिश है, जो करीब 30 साल की जंग में पिस चुके तमिल अल्पसंख्यकों की इच्छाओं को समझते हैं।

पर चावल से बने इडियप्पम और सांभर की दावत उड़ाई थी। उनके विरोधी राजपक्षे ने कहा, 'रात में इडियप्पम खाया और सुबह पीठ में छुरा घोंप दिया।' एक ऐसा शख्स जिसने विरोधियों के शब्दों में पुलिसिया शासन चला रखा था और जिसके शासन में विरोधियों की जासूसी की जाती थी और उन्हें डराया जाता था, उसके लिए यह बेहद सदमे वाली बात थी।

लेकिन उन्हें इस तरह चैंकाने वाले सिरिसेना अकेले उम्मीदवार नहीं थे। मई 2009 में तमिल टाइगरों को कुचलने के कुछ महीने बाद 2010 में राजपक्षे जब लोकप्रियता के चरम पर थे, तो उन्होंने राष्ट्रपति चुनाव करा लिए। तब उनके सामने सेना के कमांडर जनरल शरत फोंसेका थे, जिन्होंने युद्ध के कुछ आखिरी वर्षों में सेना की अगुआई की थी। फोंसेका चुनाव हार गए। उनसे नाराज राष्ट्रपति ने मामूली से आरोपों पर उन्हें जेल में डाल दिया और उनके करीबी सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया। बहुतों का मानना है कि बदले की इस कार्रवाई के बाद से ही राष्ट्रपति की लोकप्रियता घटनी शुरू हो गई थी। उन्होंने पेशेवरों, बुद्धिजीवियों और मध्य वर्ग का समर्थन खो दिया।

जब नए-नए राजमार्ग बन गए और कोलंबो में बुनियादी ढांचे के निर्माण का काम बढ़ गया तो राजपक्षे ने सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। उन्होंने अपने राजनैतिक विरोधियों और मीडिया को डराना शुरू कर दिया। बहुत से पत्रकार देश छोड़कर भाग गए। विरोधियों के फोन टैप किए जाने लगे। आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने अपने परिवार और करीबियों को भारी कमिशन के जरिए मोटी कमाई करने की छूट दे दी, खासकर चीन के ठेकों के जरिए।

श्रीलंका का मध्य वर्ग इस तरह के भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद से नाराज हो गया लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में राजपक्षे का जनाधार मजबूत बना रहा। राजनैतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि तीसरी बार राष्ट्रपति बनने की उनकी कोशिश का मकसद अपने 28 वर्षीय बेटे नमल के लिए रास्ता साफ करना था, ताकि 2021 में 35 साल की निर्धारित उम्र पूरी करने के बाद वह राष्ट्रपति का चुनाव लड़ सके।

तभी बोदु बाला सेना (बीबीएस) या बुद्धिस्ट पावर ग्रुप का उदय होना शुरू हुआ, जो श्रीलंका में बड़ा मोड़ साबित हुआ। यह 2012 में बना कट्टर राष्ट्रवादी बौद्ध भिक्षुओं का ग्रुप था, जिन्होंने हिंदुओं, मुसलमानों और ईसाइयों के खिलाफ भावनाएं भड़का दीं। इस ग्रुप को राजपक्षे के भाई और ताकतवर रक्षा सचिव गोतबाया का मौन समर्थन हासिल था।

ग्रुप ने मुसलमानों और गिरजाघरों पर हमले शुरू कर दिए। उनकी मुख्य शिकायत यह थी कि कोलंबो में मुस्लिम आबादी बौद्धों के मुकाबले तेजी से बढ़ रही थी। पिछले साल जून में कथित रूप से बीबीएस के दर्जनों बौद्ध भिक्षुओं और उनके समर्थकों ने मुस्लिम बहुल शहर बेरुवाला में हमला किया था, जिसमें तीन लोग मारे गए थे। मुस्लिम राजनैतिकों, जिन पर राजपक्षे अपनी सरकार में समर्थन के लिए निर्भर थे, ने जोरदार विरोध किया और कार्रवाई करने की मांग की।

गलती सुधार का समय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल जब 13वें संशोधन को 'जल्दी और पूरी तरह से लागू करने' की अपील की तो श्रीलंका के तत्कालीन राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे को जोर का झटका लगा था। राजपक्षे के साथ अपनी पहली मुलाकात में मोदी ने कहा कि यह संशोधन, जो 1987 में भारत-श्रीलंका समझौते का हिस्सा है, प्रांतीय परिषदों को पुलिस और भूमि के अधिकार देता है और यह राष्ट्रीय सुलह के काम में योगदान देगा।

भारत 2009 में गृहयुद्ध खत्म होने के बाद से ही यह बात दोहराता आया है, लेकिन राजपक्षे को उम्मीद नहीं थी कि मोदी सरकार भी इसे दोहराएगी। इसके बाद छह सदस्यीय तमिल नेशनल अलायंस पार्टी, जिसका पिछले साल अगस्त में उत्तरी प्रांतीय परिषद पर नियंत्रण था, के दौरे के समय भी यही मांग की गई।नई दिल्ली स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ डिफेंस स्टडीज ऐंड एनालिसिस की स्मृति पटनायक कहती हैं, 'राजपक्षे की प्रतिक्रिया के रूप में फिर से चीन का कार्ड खेलना था।' चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के कोलंबो दौरे और पिछले साल अक्तूबर में नई दिल्ली दौरे के समय जब दूसरी बार चीनी पनडुब्बियों को लंगर डालने की इजाजत दी गई तो साउथ ब्लॉक में व्याकुलता पैदा हो गई। भारत की ओर से श्रीलंका के विपक्ष को समर्थन दिया जाने लगा।

बहरहाल, नई दिल्ली ने 8 जनवरी के चुनाव में सार्वजनिक रूप से खुद को निष्पक्ष दिखाने की कोशिश की। अगले दिन चुनाव में ऐतिहासिक जीत के तुरंत बाद मोदी ने राष्ट्रपति मैत्रीपाल सिरिसेना को भारत आने का न्यौता भेज दिया, जो राजपक्षे के शासन में खराब हो चुके संबंधों को फिर से मजबूत करने के मौके का साफ संकेत था. सिरिसेना 'चीन, भारत, पाकिस्तान और जापान के साथ समान संबंधों' का वादा कर चुके हैं. यह साफ बताता है कि वे चीन की ओर झुकाव वाले पहले के रुख को अब संतुलित करना चाहते हैं। लेकिन नई दिल्ली की चिंताओं को दूर करने के मामले में उन पर भारी दबाव रहेगा, जैसे युद्ध से बेहाल उत्तरी और पूर्वी इलाकों के तमिलों को श्रीलंका की मुख्यधारा में शामिल करना। श्रीलंका ने 25 वर्षों में उत्तरी इलाकों में प्रांतीय परिषद का पहला चुनाव कराया, लेकिन पुलिस और जमीन के मामले में उसे कोई अधिकार नहीं दिया गया, जिससे उनकी हैसियत नगरपालिकाओं जैसी ही रह गई।

समाज की नकारात्मक सोच बदलनी होगी

विभूति शर्मा
पत्रकार
827 सुदामा नगर, इंदौर
मो. : 9993099004

विवादित बयानों पर अपनी प्रचार लोलुपता की भूख मिटाने वालों में नए दौर के उपन्यासकार चेतन भगत अग्रणी हैं। उनका ताजा ट्वीट चार बच्चे पैदा करने सम्बन्धी बयान पर है। वे कहते हैं की मेरे दो बच्चे हैं तो क्या मैं हाफ हिन्दू हूँ। इसका मतलब है की जिनके बच्चे नहीं वे तो हिन्दू ही नहीं ! दरअसल नेताओं की तो दुकान ही विवादों से चलती है। मीडिया टीआरपी के लिए इन बयानों को हवा देता है। लेकिन जब आज के यूथ आइकॉन बन चुके भगत जैसे लेखक इस तरह के ट्वीट करते हैं तो आश्चर्य होता है, क्योंकि वे लेखन के रूप में अपना अलग स्थान बना चुके हैं।

मेरा मानना है कि जब भी कोई बात कही जाती है तो उसके अनेक अर्थ निकलते हैं या निकले जा सकते हैं। यह सीधा सीधा व्याख्या का मामला है। एक विचारक किसी भी बात की कई तरह से व्याख्या कर सकता है और कर भी रहा है. नकारत्मकता से लबरेज आज के दौर में प्रचार का भूखा हर व्यक्ति किसी भी बात की नकारात्मक व्याख्या करके ही अपना उल्लू सीधा कर रहा है। समाज में

गहरे तक पैठ बना चुकी नकारात्मक्त का लाभ सभी उठाना चाहते हैं। उन्हें इससे कुछ लेना देना नहीं कि वे देश का कितना अहित कर रहे हैं।

राजनीति इस दौड़ में सबसे आगे है। लगभग सभी दलों के नेताओं ने जनता के बीच नकारात्मक माहौल बनाने में अहम भूमिका निभाई है। पत्रकारिता के छात्रों को प्रारम्भ में आधा गिलास खाली या आधा गिलास भरा यह उदाहरण प्राय: दिया जाता था। साथ ही बताया जाता था कि यह तो देखने वाले के नजरिये पर निर्भर करता है कि वह किस रूप में देख रहा है। सकारात्मक या नकारात्मक। दरअसल आजादी की लड़ाई और उसके बाद के दौर में आधा गिलास खाली देखना समय की मांग थी और विकास के लिए यह जरूरी था। लेकिन आज के दौर में अब यह सोच बदलनी चाहिए। अगर हमें तरक्की और विकास के पथ पर आगे बढ़ना है तो सकारात्मक सोच के साथ ही ऐसा संभव होगा।

अफसोस इस बात का है कि राजनेता इस सोच को नहीं अपना पा रहे हैं, जबकि हमारी युवा पीढ़ी इसे स्पष्ट समझ रही है और नेताओं कि नकारात्मक बयानबाजी के कारण ही काफी हद तक उन्हें घृणा की नजर से देखने लगी है। ऐसे में अगर युवकों पर ये तोहमत मढ़ी जाये की युवा पीढ़ी राजनीती में रूचि नहीं लेती तो यह कहाँ तक जायज माना जाये. युवा पीढ़ी को नीति नियामक तंत्र में शामिल करना है तो पहले हमें समाज में नया नजरिया लाना होगा। और इसके लिए मीडिया के साथ साथ विचरकों को भी अपने सोचने देखने का नजरिया बदलना होगा। जरूरी नहीं की हर बात की नकारात्मक व्याख्या ही की जाये। पहले विचार करें और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। फिर देखिये नेताओं के बयान भी अपने आप बदलने लगेंगे और समाज भी बदलने लगेगा।

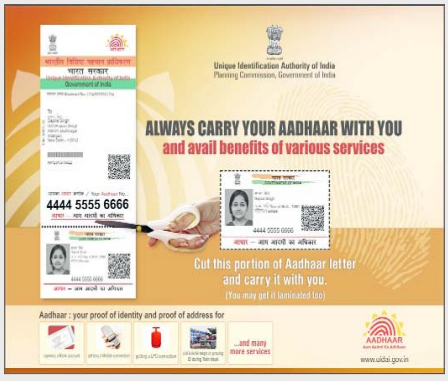

ऐसे पता करें बैंक से जुड़ा आधार या नहीं

यह पता करने के लिए कि आपका आधार नंबर आपके बैंक अकाउंट के साथ जुड़ गया है या नहीं, उपभोक्ता अपने मोबाइल पर *99*99# डायल करें। इसके बाद 12 डिजिट का आधार नंबर डालें और ओके करें। आधार नंबर सही है यह पुष्टि करने के लिए 1 डायल करें। इसके बाद मोबाइल पर आधार कार्ड के बैंक से जुड़े होने की जानकारी मिल जाएगी। इस मैसेज में यह भी बताया जाएगा कि किस बैंक से किस तारीख को आधार कार्ड लिंक हुआ है।

एक जनवरी से एलपीजी की सब्सिडी सीधे उपभोक्ता के बैंक अकाउंट में ट्रांसफर करने के लिए आधार कार्ड को बैंक खातों से जोड़ा जा रहा है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक इसके तहत अब तक 10 करोड़ आधार नंबर को बैंक अकाउंट से जोड़ा जा चुका है। इसके अलावा मनरेगा, पीडीएस, स्कॉलरशिप, रेमिटेंस आदि के लिए भी आधार को बैंक अकाउंट से जोड़ना जरूरी है। आधार नंबर को बैंक अकाउंट से जोड़ने के लिए नागरिकों से उनका आधार कार्ड या आधार नंबर उस बैंक की शाखा में जमा करवाने को कहा गया है जहां उनका बैंक खाता है।

दस दिन तक चली शाही शादी

पूर्व राजकोट रियासत के राजपरिवार में एक बार फिर शहनाई बजने वाली है। युवराज मांधाता सिंह के पुत्र जयदीप सिंह का विवाह जनवरी-2015 में है। डूंगरपुर की राजकुमारी शिवात्मिका कुमारी जयदीप सिंह की जीवन संगिनी बनेंगी। जयदीप-शिवात्मिका के मंगल विवाह की रस्में 15 जनवरी से आरंभ होकर 25 जनवरी तक चली। ये शाही शादी बैंगलौर के बैंगलोर पैलेस में होगी। युवराज मांधाता सिंह ने ये जानकारी दी।

वैदिक पद्धति से विवाह : युवराजने बताया कि- वैदिक पद्धति से विवाह होगा। दादा मनोहर सिंहजी के मार्गदर्शन में 10 दिन का विवाह कार्यक्रम तय किया गया है। 15 जनवरी को दरिद्रनारायण के भोज से शुभ प्रसंग आरंभ हुआ। साथ ही आयुर्वेदिक ट्री-प्लांटेशन किया गया।

यूं चले मंगल प्रसंग...

16 जनवरी - रणजीत विलास पैलेस में संत-महंतों के लिए महाप्रसाद का आयोजन।

17 जनवरी - सर्वजाति के लिए प्रीति भोज।

21 जनवरी - मंडपमहूर्त अनुसार जरूरी पूजा-अनुष्ठान।

22 जनवरी - भ्रमणयात्रा (फुलेकू) 100 पुरानी आठ बग्गी एवं 50 विंजेट कारें इस भ्रमण यात्रा का मुख्य आकर्षण। मांधाता सिंह के नेतृत्व में पांच हजार क्षत्रीय परंपरागत पोशाक में हिस्सा लेंगे। दूल्हेराजा हाथी पर सवार हुए।

23 जनवरी - राजकोटसे बैंगलौर के लिए बारात प्रस्थान करेगी। राजवंश परंपरा के अनुसार सिर्फ पुरूष ही बारात में जाएंगे। 200 लोग हवाई जहाज से बैंगलौर पहुंचे।

24 जनवरी - बैंगलौरपैलेस में हस्तमिलाप।

25 जनवरी - गृहप्रवेश। बहू लेकर बारात राजकोट लौटी। रात में रिसेप्शन।

राजशी परंपरा के अनुसार 12 दिसंबर को टीका रस्म हुई।

अरुन्धति भट्टाचार्य का नाम ताकतवर महिलाओं में शामिल

एसबीआई चेयरमैन की दुनिया में धाक

भिलाई की बेटी बनीं दुनिया की 36 वीं सबसे ताकतवर महिला। इस साल फॉरच्यून ने उन्हें ये खिताब दिया। इसके अलावा एशिया पेसेफिक ने उन्हें एशिया की चौथी ताकतवर महिला बताया। वे एसबीआई की 24वीं व पहली महिला चेयरपर्सन बनीं। पिता प्रद्युम्न कुमार बीएसपी में काम करते थे। भारतीय स्टेट बैंक की चेयरपर्सन अरूंधति भट्टाचार्य ने साल 1977 में एक प्रोबेशनरी ऑफिसर के रूप में अपना करियर शुरू किया था। अपने 36 साल के करियर में उन्होंने विभिन्न बैंकिंग स्पेक्ट्रम में काम किया है। इतना ही नहीं वह एसबीआई के न्यू यॉर्क ऑफिस में भी काम कर चुकी हैं।

भिलाई में बीता पूरा बचपन : बंगाली हिन्दू कुलीन ब्राह्मण परिवार में जन्मीं अरूंधति का पूरा बचपन छत्तीसगढ़ के भिलाई में बीता। उनके पिता प्रद्युम्न कुमार भिलाई स्टील प्लांट में काम करते थे। उनकी माता कल्याणी मुखर्जी बोकारो में होम्योपैथी सलाहकार थीं। इनकी स्कूली शिक्षा बोकारों के सेंट जेवियर्स स्कूल में पूरी हुई।

उम्र 11 साल, लिखती है दोनों हाथों से

मेरठ के एक स्कूल की क्लास 6 में पढ़ने वाली 11 साल की तेजस्वी एक साथ दोनों हाथों से लिखती हैं। उसका यह अनूठा हुनर उसके साथ पढ़ने वाले अन्य बच्चों के अलावा अब क्षेत्र में चर्चा का विषय बना गया है। हर कोई उसके इस हुनर को देखने का इच्छुक है। माता-पिता कहते हैं कि मां शारदा के आशीर्वाद से ही यह संभव है।

गढ़ रोड स्थित बैंक कालोनी निवासी कुलदीप त्यागी एक साधारण किसान हैं। मूलरूप से वह खरखौदा ब्लाक के गांव खासपुर के रहने वाले हैं। तेजस्वी कुलदीप की बड़ी बेटी है, उससे छोटा बेटा कुस्तुभ त्यागी है। तेजस्वी एक साथ दोनों हाथों से लिखती है। एक साथ वह दोनों हाथों ने हिंदी और अंग्रेजी अलग-अलग भाषाओं में लिख लेती है। अपने हुनर को और अधिक निखारने के लिए वह प्रैक्टिस कर रही है। कुलदीप त्यागी ने बताया कि बचपन में एक दिन अचानक उनकी बेटी ने उल्टे हाथ से लिखना शुरू कर दिया था। तभी से वह दोनों हाथों से लिख रही है।

कड़ाहे में बनता है एक साथ 4000 लोगों का खाना

फतेहगढ़ साहिब. साढ़े पांच फुट घेरे वाले ढाई फुट गहरे इस कड़ाहे में 4000 लोगों के लिए दाल-सब्जी आराम से बन जाती है। इस कड़ाहे में एक क्विंटल दाल बनती है। उठाने के लिए छह से आठ आदमियों की जरूरत होती है। ऐसे कड़ाहे जोड़ मेल के दौरान लगे 500 से ज्यादा सभी लंगरों में हैं। जिन्हें दिन में दस से ज्यादा बार भट्टी पर चढ़ाया जाता है। तीन दिन चलने वाले इस मेल के पहले दिन कड़ाके की ठंड में भी करीब पांच लाख से ज्यादा संगत पहुंची। तीन दिन में करीब 25 लाख संगत के पहुंचे।

लंगर से खत्म हुए जाति वर्ण के भेद : लंगर की प्रथा श्री गुरु नानक देव जी के समय में ही आरंभ हो गई थी। दूर-दूर से गुरु जी के उपदेश सुनने के लिए जो आता था उसके लिए लंगर बनता था। गुरु का लंगर गरीबों तथा जरूरतमंदों के लिये भी खुला था। गुरुजी ने एक ही पंगत में बैठकर सभी को भोजन करने को कहा। इससे ब्राह्मणों की पैदा की गई जाति-वर्ण की बांट को भी खत्म किया गया।

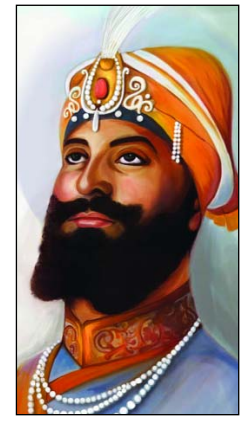

गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा था चालू रहे लंगर : श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने सचखंड जाने से पहले लंगर का महत्व बताते हुए सिखों को हुक्म दिया था कि इस प्रथा को चालू रखा जाए। भाई संतोख सिंह जी को स्वयं श्री हजूर साहिब की जिम्मेदारी सौंपी और तथा लंगर चालू रखने का आदेश दिया था।

और हिट हो गया जूता भी

गिरीश पंकज
सद्भावना दर्पण के संपादक और साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के पूर्व सदस्य हैं।
इनकी छः उपन्यास, दस व्यंग्य संग्रह सहित चालीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं

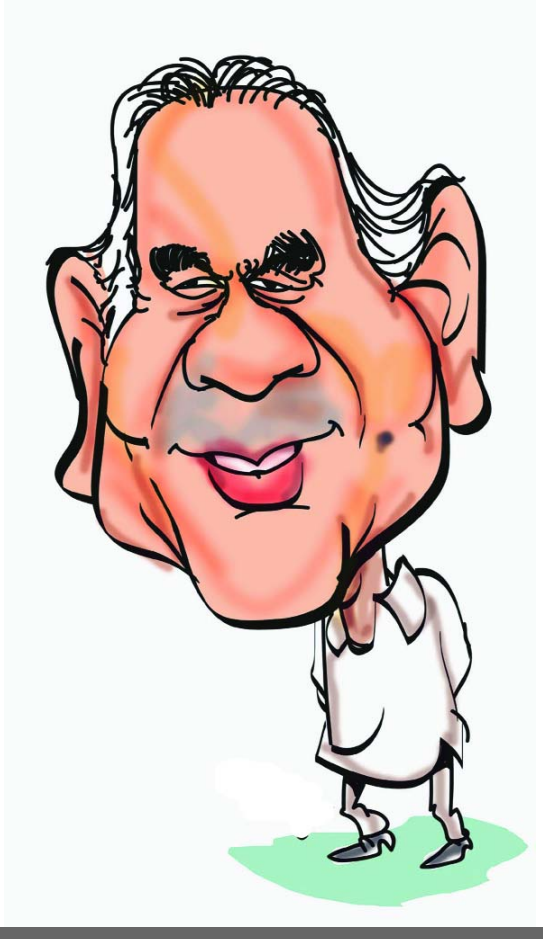

जो लोग जूते फेंकते हैं उनको गिरफ्तार नहीं किया जाये, उनका अभिनन्दन हो। दरअसल ये त्यागी लोग है। सात्विक लोग है। आज की कमरतोड़ महंगाई के दौर में कोई अपना जूता फेंक दे तो सोचिये कितनी बड़ी बात है

ये लो, फिर चल गया न जूता।

यानी 'जिसका डर था बेदर्दी वही बात हो गयी'। कितने दिन तो हो गए थे, किसी नेता पर जूता ही नहीं फेंका गया था। कैसा-कैसा तो लग रहा था देशवासियों को। मन के गुस्से की अभिव्यक्ति किसी -न-किसी रूप में होती रहे तो लोगो को अच्छा लगता है. लोकतंत्र में यह जरूरी है। दुष्यंत ने कहा भी तो है कि

'मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए'

कुछ नेता भी चिंतित थे कि जूते पड़ क्यों नहीं रहे। उन्हें अपनी करनी समझ में आती तो है। जूते पड़ते हैं तो क्या है कि इसी बहाने रोचक खबर भी बन जाती है। और घर बैठे प्रसिद्धि मिल जाती है कि फलाने पर जूता उछाला गया। अखबारों में समाचार आ जाता है और टीवी पर बार-बार वही जूता दिखाया जाता है। जूता उछला और नेता जी उससे बचे या उसके शिकार हो गए। स्लो मोशन में बार-बार वही दृश्य चलता है तो भोले-भाले लोग समझते है कि वाह, खूबई पड़े और खुश होते है। उनकी छतिया जुड़ा जाती है।

वैसे अनेक वीवीआईपी जूतों या चप्पलों से भयंकर खौफ खाए रहते हैं। उन्हें पता होता है कि कही भी और कभी भी वे एकाध जूते-चप्पल तो खा ही सकते हैं। अपनी हरकतों के बारे में वो बेहतर जानते हैं न। कभी अंट-शंट बयान देना, कभी जनविरोधी फैसले करना। अपनी अकड़ दिखाते रहना। लोगों से मिलना ही नहीं, मिलना तो सीधे मुँह बात ही नहीं करना। जनता तो नाराज रहती ही है और

मौके का इंतजार करती है। एक दिन अचानक कोई ''वीर'' सामने आता है और जूते उछाल देता है, बस, खबर बन जाती है और नेताजी बिना कुछ किये चर्चित हो जाते हैं। लगे हाथ वो 'जूता-वीर' भी हिट हो जाता है और जूता भी।

जूता खाए एक नेताजी कही भी जाते थे तो इधर-उधर देखते ही रहते थे कि कही से कोई जूता या चप्पल तो नहीं चला आ रहा। वे बेचारे भी क्या करे. करम ही कुछ ऐसे है कि लोग न चाहते हुए भी अपने महंगे जूते इनकी तरफ उछाल देते हैं।

मैं तो कहता हूँ जो लोग जूते फेंकते हैं उनको गिरफ्तार नहीं किया जाये, उनका अभिनन्दन हो। दरअसल ये त्यागी लोग है। सात्विक लोग है। आज की कमरतोड़ महंगाई के दौर में कोई अपना जूता फेंक दे तो सोचिये कितनी बड़ी बात है। लेकिन हमारी सरकार जूते फेंकने वाले को पकड़ लेती है। यह उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला है। बेचारा, मुंह से कुछ बोल नहीं पाता तो क्या जूते-चप्पल फेंक कर अपने को अभिव्यक्त करता है।

उस दिन जूता उछलने के बाद गिरफ्तार होने वाले युवक से हमने पूछा, ''भाई, ये क्या सूझी, तुमने नेताजी पर जूता क्यों फेंका?''

इस पर युवक ने कहा, ''उस दिन जूता ही पहने था न, चप्पल पहनना भूल गया, क्या करता। मजबूरी थी। फेंकना जरूरी था।''

मैंने कहा, ''नारे लगा लेते उसके खिलाफ, धरना दे देते, जूता फेंकना हिंसक कर्म है। गांधी जी ये सब पसंद नहीं करते थे।''

जूता पैरों की शोभा ही नहीं बढ़ाता, अब वह सर पर भी शोभायमान होने लगा है

युवक कुछ देर मौन रहा फिर बोला, ''आज के नेताओ का आचरण ऐसा है कि बातों से बात बनती ही नहीं। मुझे लगता है कि आज अगर गांधी भी होते तो वे अपना डंडा ही चला देते। वे चुप नहीं बैठते। फिर भले ही अपनी हरकत पर शर्मिंदा हो कर उपवास पर बैठ जाते।''

युवक की बात में दम तो था। मैं कुछ और पूछना चाहता था, तब तक पुलिस युवक से कुछ पूछने के लिए उसे थाने ले गयी। पुलिस को शक था कि वह किसी विपक्षी दल का सदस्य है। लेकिन लोग जानते थे कि वह किसी भी दल-दल में नहीं था और नेताजी जी की नाकारी हरकतों के कारण केवल गुस्से में था, और जूते फेंकते वक्त वह भी एक तरह से जनप्रतिनिधि की भूमिका में ही निभा रहा था। जूता पैरो की शोभा ही नहीं बढ़ाता, अब वह सर पर भी शोभायमान होने लगा है कवि जूते की वन्दना करते हुए कहता है-

जूता तू तो धन्य है
तू है इक हथियार।
मौका जब भी मिलता है,
रहता है तैयार।
रहता है तैयार,
प्रेम से चलता है।
इसीलिये तू
नेताओ को खलता है।
लेकिन सबक सीखने वाला,
तू है सच्चा दूत।
तेरे भय से होंगे नेता,
इक दिन तो मजबूत।

राजनीतिक, सनसनीखेज, खोजपूर्ण, खेल व बॉलीवुड की खबरों के लिए पढ़ते रहिये

छत्तीसगढ़ की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

समवेत सृजन

कैप्टन कूल टेस्ट क्रिकेट को अलविदा

भारत के सबसे सफलतम कैप्टन कूल एम एस धोनी ने टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह दिया है। एक बार फिर धोनी ने एक ऐसा फैसला किया जिसने क्रिकेट जगत को चौंका दिया। धोनी ने टीम इंडिया के लिए 60 टेस्ट मैचों में कप्तानी की है, इन 60 में से भारतीय टीम ने 27 मैच जीते, जबकि 18 में हार मिली।

इंग्लैंड के तुरंत बाद राहुल द्रविड़ अचानक कप्तानी छोड़ देने तथा दक्षिण अफ्रीका में होने वाले पहले टी-20 विश्वकप में राहुल द्रविड़, सचिन तेंदुलकर, सौरव गांगुली, अनिल कुंबले जैसे वरिष्ठ खिलाड़ियों द्वारा ने खेलने के फैसले से चयनकर्ताओं को कप्तान चुनने के लिए परेशान थे। चयनकर्ताओं की पहली पसंद तेंदुलकर थे लेकिन सचिन तेंदुलकर फिर से कप्तानी न संभालने का फैसला कर चुके थे। उनकी सलाह से चयनकर्ताओं ने विकेटकीपर-बल्लेबाज महेंद्र सिंह धोनी को कप्तान चुना। महेंद्र सिंह धोनी ने भी चयनकर्ताओं और भारतीय प्रशंसकों को निराश नहीं किया और भारत ने पहला टी-20 विश्वकप जीता। इस जीत के बाद उन्हें वनडे का भी कप्तान बना दिया गया।

कुछ समय बाद अनिल कुंबले के सन्यास लेने के बाद उन्हें टेस्ट क्रिकेट की भी कप्तानी सौंप दी गई।

धोनी की ही कप्तानी में टीम इंडिया टेस्ट क्रिकेट में पहली बार नंबर एक टीम बनी। हालांकि यह भी सच है कि धोनी की ही कप्तानी में टीम इंडिया टेस्ट रैंकिंग से टॉप फाइव से बाहर भी हुई। धोनी ने अपनी कूल कप्तानी से मिसाल कायम की।

धोनी की कप्तानी में भारत ने 2011 का वनडे वर्ल्ड कप श्रीलंका को हराकर जीता। फाइनल मैच में उन्होंने अपनी धमाकेदार पारी से भारत को मैच जिताया। इसके बाद चैंपियंस ट्राफी में भारत को विजयी बनाया।

टेस्ट में धोनी के रिकॉर्ड की बात करें तो उन्होंने 90 टेस्ट मैच खेले हैं और इस दौरान उनके बल्ले से 6 शतक और 33 अर्धशतक भी निकले। धोनी का बेस्ट स्कोर 224 रन है।

धोनी ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के मेलबर्न टेस्ट मैच में विकेटकीपिंग में एक नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। धोनी ने इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा स्टंपिंग के कुमार संगकारा के रिकॉर्ड को ध्वस्त करते हुए वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। 134वीं स्टंपिंग के साथ इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा स्टंपिंग का नया रिकॉर्ड बनाया। इससे पहले यह रिकॉर्ड कुमार संगकारा के नाम था।

फैसलाबाद टेस्ट में पाकिस्तान के खिलाफ लगाया गया शतक किसी भी भारतीय विकेटकीपर का सबसे तेज शतक है। धोनी ने 93 बॉल में सेंचुरी लगाई। दुनिया भर की बात करें तो सिर्फ पाकिस्तानी विकेटकीपर कामरान अकमल और ऑस्ट्रेलियाई एडम गिलक्रिस्ट ही इससे तेज सेंचुरी बना सके हैं।

रनों के मामले में भारत को सबसे बड़ी जीत धोनी की कप्तानी में ही मिली। 21 अक्टूबर 2008 को भारत ने ऑस्ट्रेलिया को 320 रन से हराया।

धोनी की कप्तानी में ही भारत ने अब तक का सबसे बड़ा टेस्ट स्कोर किया। ये हुआ श्रीलंका के 2009 में हुए भारत दौरे के दौरान। भारत ने पहली पारी में 726 रन बनाए नौ विकेट गंवाकर और फिर पारी घोषित कर दी। इसी सीरीज में भारत 2-0 से जीता और आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में नंबर वन हो गया।

टेस्ट कैप्टन बनने के बाद अजेय रहने का रेकॉर्ड भी धोनी के नाम है। कप्तान बनने के बाद वह लगातार 11 टेस्ट मैच तक अपराजेय रहे। इस दौरान भारत ने 8 मैच जीते और 3 ड्रॉ किए। फिर भारत नागपुर में फरवरी 2010 में साउथ अफ्रीका से मैच हारा और यह रिदम टूटी। धोनी से पहले यह रेकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के कप्तान वारविक आर्मस्ट्रॉन्ग के नाम था।

टेस्ट कैप्टन बनने के बाद अजेय रहने का रेकॉर्ड भी धोनी के नाम है। कप्तान बनने के बाद वह लगातार 11 टेस्ट मैच तक अपराजेय रहे। इस दौरान भारत ने 8 मैच जीते और 3 ड्रॉ किए। फिर भारत नागपुर में फरवरी 2010 में साउथ अफ्रीका से मैच हारा और यह रिदम टूटी। धोनी से पहले यह रेकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के कप्तान वारविक आर्मस्ट्रॉन्ग के नाम था।

धोनी एक ऐसे कप्तान रहे हैं, जो कभी भी एक्सपेरिमेंट करने से पीछे नहीं हटे. कई बार एक्सपेरिमेंट सफल हुए तो कई बार उसका खामियाजा भी भुगतना पड़ा लेकिन धोनी एक्सपेरिमेंट करने से पीछे नहीं हटते थे। गेंदबाजी में बदलाव हो, फील्ड प्लेसमेंट हो या बल्लेबाजी ऑर्डर में तब्दीली करनी हो धोनी कभी भी एक्सपेरिमेंट से डरे नहीं। यह क्वालिटी उन्हें बाकी कप्तानों से अलग करती है। तो विराट अगर आपको भी लंबे समय तक टीम की बागडोर संभालनी है तो एक्सपेरिमेंट से पीछे मत हटना।

धोनी को दो बार टेस्ट मैच में मैन ऑफ द मैच अवॉर्ड मिला। दोनों बार भारत में हुए टेस्ट मैच में विरोधी टीम थी ऑस्ट्रेलिया। विराट कोहली का खराब फॉर्म हो, या इंग्लैंड में जडेजा-एंडरसन विवाद जब भी खिलाड़ियों को कैप्टन कूल के सपोर्ट की जरूरत हुई धोनी ने उन्हें निराश नहीं किया। मीडिया में बात करते हुए धोनी हमेशा ध्यान रखते रहे हैं कि उन्हें क्या बोलना है और क्या नहीं।

माही के नाम से मशहूर धोनी ऑन फील्ड हों या ऑफ फील्ड साथी खिलाड़ियों का हमेशा सम्मान किया है। स्लेजिंग का जवाब धोनी ने कभी स्लेजिंग ने नहीं दिया बल्कि अपने बल्ले से दिया है। यह विराट के लिए बहुत अहम सबक होगा। धोनी खुद भी आक्रामक कप्तान रहे हैं लेकिन अति आक्रामकता से बचते रहे हैं।

जरा नहीं हिचकिचाए रणवीर-अनुष्का

'बैंड बाजा बारात' जोड़ी अनुष्का शर्मा और रणवीर सिंह को जोया अख्तर की 'दिल धड़कने दो' में एक बार फिर साथ देखने का मौका मिलने वाला है। ब्रेकअप के बाद दोनों एक्टर्स पहली बार साथ काम कर रहे हैं। चर्चा है कि इस फिल्म में वे जबरदस्त लवमेकिंग सीन करते दिखेंगे। यह सीन स्क्रिप्ट का हिस्सा है लेकिन जानना रोचक होगा कि उनके रिश्ते के बदले समीकरण के कारण कहीं ये एक-दूसरे से असहज तो नहीं थे। जब जोया ने फिल्म की टीम कास्ट की थी तब चर्चा थी कि कहीं इन एक्स-लवर्स के बीच असहजता तो नहीं होगी। विशेषकर जब रणवीर की वर्तमान गर्लफ्रेंड दीपिका पादुकोण ने उन्हें क्रूज पर ज्वॉइन किया, लेकिन गड़बड़ कुछ नहीं हुआ। रणवीर और अनुष्का दोनों अपनी जिंदगी में आगे बढ़ गए हैं। इसलिए वे पूरी तरह से प्रोफेशनल थे और बिना किसी हिचक के उन्होंने इन्टिमेट सीन किया। अनुष्का इस फिल्म में एक क्लब डांसर बनी हैं। वे फिल्म में रणवीर की प्रेमिका हैं और उनके साथ स्पेशल आयटम नंबर भी किया है।

शूटिंग के दौरान भी वर्ल्ड कप के मैच देखेंगे रणबीर

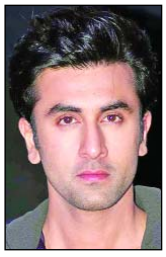

बॉलीवुड एक्टर रणबीर कपूर अगले महीने शुरू होने जा रहे 2015 आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कुछ भी हो, वो शूटिंग के बीच में भी वर्ल्ड कप देखने के लिए वक्त निकाल लेंगे।

रणबीर ने कहा '2015 आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप शुरू होने जा रहा है और हम सब काम और जिंदगी की बाकी चीजों में बिजी होंगे। हमारे देश के पसंदीदा खेल क्रिकेट को देखना हमारे लिए बेहद जरूरी है।' रणबीर ने आगे कहा 'मैं शूट के दौरान बीच में मैच देखने की कोशिश करूंगा और मुझे यकीन है कि और लोग भी इसके लिए वक्त निकाल लेंगे। ये आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप है और जब भारत खेल रहा हो तो लोग इसे जरूर देखेंगे।' क्रिकेट वर्ल्ड कप को लेकर सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दुनियाभर में जबरदस्त क्रेज है।

4 मिनट यानी सवा करोड़ रुपए

प्रियंका चोपड़ा ने हाल ही में स्टार गिल्ड अवॉर्ड्स 2015 में स्टेज पर शानदार परफॉर्मेंस दी थी। सूत्रों से खबर मिली है कि उनकी परफॉर्मेंस उस शाम की सबसे महंगी परफॉर्मेंस थी। सुनने में आया है कि महज चार मिनट की परफॉर्मेंस के लिए प्रियंका को 1.25 करोड़ रुपए दिए गए थे। सूत्रों के मुताबिक जब प्रियंका चोपड़ा अपनी कार से उतरी थी, तभी से उनकी परफॉर्मेंस शुरू हो गई थी। इसके बाद वो रेड कार्पेट पर चलकर आईं। ये उनके पॉप स्टार अवतार को दिखाने के लिए था। रेड कार्पेट पर भी कैमरे लगाए गए थे ताकि स्टेज तक जाते हुए उन्हें रिकॉर्ड किया जा सके।

सूत्र ने कहा, 'प्रियंका और उनकी टीम ने कॉन्सेप्ट और उनके स्टाइल को लेकर काफी मेहनत की थी। उन्होंने गुंडे के गाने अस्सलामे—ए—इश्कुम की धुन पर डांस किया था। आयोजकों को इस परफॉर्मेंस के लिए 1.25 करोड़ रुपए देने थे।

टैक्स बचाने के तरीके

आयकर की धाराओं के तहत मिलती है छूट

अरुण अग्रवाल
निवेश सलाहकार
(बांसटाल रायपुर, छ.ग.)
मोबाइल :
98271-92266

चिंता का विषय यह है की कितने लोग यह जानते हैं कि 80 सी धारा के अंतर्गत कौन से वित्तीय उत्पाद आते हैं। लोग केवल यूलिप के बारे में जानते हैं; वह इसलिए क्योंकि बीमा कंपनियाँ अपने उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए व्यापक रूप से अभियान चला रही हैं जिससे उनकी बिक्री में वृद्धि हो। लेकिन केवल यूलिप ही एक वित्तीय उत्पाद नहीं है जो कि 80 सी के अंतर्गत छूट दिलवाता है। इस आलेख में सभी वित्तीय उत्पादों के बारे में जानकारी आप पायेंगे जो धारा 80 सी के अंतर्गत आते हैं-

धारा 80 सी, एक आम आदमी जिसे आयकर के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं होती है वह भी इसके बारे में जानता है। आयकर अधिनियम 80 सी के तहत सरकार कुछ वित्तीय उत्पादों में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इन वित्तीय उत्पादों में निवेश करने पर 1 लाख रुपये तक की छूट 80 सी के अंतर्गत ले सकते हैं, यदि आपकी वार्षिक आय 5 लाख से अधिक है तो आप 1 लाख रुपये का निवेश 80 सी में करने के बाद 33 हजार रुपये का टैक्स बचा सकते हैं।

आमतौर पर लोग 80 सी के अंतर्गत निवेश के लिए फरवरी या मार्च में ही सोचते हैं क्योंकि उन्हें केवल टैक्स बचाने की चिंता होती है, वे कभी भी उस निवेश की उत्पादकता के बारे में नहीं सोचते हैं। इस स्थिती में आप अपने देय टैक्स से ज्यादा धन को गँवा सकते हैं।

उदाहरण के लिए- कुमार की वार्षिक आय 3,00,000 रुपये है और

कुल कर देयता आयकर के लिए 14,000 रुपये है। 1 लाख रुपये का निवेश जो कि 80 सी के अंतर्गत वित्तीय उत्पाद में किया जिससे कुमार का 10,000 रुपये आयकर बचता है। लेकिन गलत वित्तीय उत्पाद में निवेश करने पर उसे 20,000 रुपये तक का नुक्सान भी हो सकता है।

जब आप किसी वित्तीय उत्पाद को निवेश के लिए चुनते हैं, उसके लिए आपको बहुत सावधानी बरतना चाहिये, आप प्रभावी निवेश केवल तभी कर सकते हैं जब आपको पता हो कि निवेश कई कारकों पर निर्भर करता है जैसे कि उसका उद्देश्य क्या है, उम्र कितनी है, कितना जोखिम ले सकते हैं, आर्थिक स्थिति कैसी है इत्यादि।

जीवन बीमा योजनाएँ

जीवन बीमा जीवन में बहुत महत्व रखता है और यह जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू भी है, यह जीवन की अनिश्चितताओं को कवर करता है। हरेक व्यक्ति जो की कमाता है और उसके ऊपर परिवार आश्रित हो तो आश्रितों के लिए पर्याप्त जीवन बीमा होना चाहिये। किसी भी जीवन बीमा योजना प्रीमियम के निवेश को आयकर की धारा 80 सी के तहत छूट मिलती है। यदि बीमा आप अपने लिए या अपनी पत्नी के लिए या

अपने बच्चे के लिए करवाते हैं तब भी आयकर की धारा 80 सी के तहत आपको उस प्रीमीयम की छूट मिलती है। अगर पति पत्नी दोनों ही नौकरीपेशा हैं और अगर पत्नी की आय आयकर योग्य नहीं है तो पति दोनों बीमा प्रीमियम पर छूट ले सकता है, ऐसा उल्टा भी हो सकता है।

यूलिप

यूनिट लिंक्ड बीमा योजनाओं (यूलिप) में जीवन बीमा और म्यूचुअल फंड में निवेश संयोजित होता है7 यूलिप में निवेशित रकम धारा 80 सी के तहत कटौती के लिए पात्र हैं7 यूलिप आपको जीवन के जोखिम का कवर देता साथ ही शेयर बाजार में आपकी रकम निवेश करता है।

ईएलएसएस

इक्विटी लिंक्ड बचत योजना (ईएलएसएस), खास तौर पर ऐसे म्युचुअल फंड तैयार किये गए हैं जो कर बचत की पेशकश करते हैं। ईएलएसएस में किया गया निवेश धारा 80 सी के तहत

छूट के हकदार हैं। याद रखे है कि सभी म्युचुअल फंड निवेश 80 सी के तहत छूट के हकदार नहीं होते हैं। सभी ईएलएसएस निवेश 3 वर्ष की अवधि में आप निकाल नहीं सकते हैं। ईएलएसएस कर बचाने वाले म्युचुअल फंड रूप में जाना जाता है।

भविष्य निधि (पीएफ)

भविष्य निधि नियोक्ता द्वारा काटी गयी वह राशि है जो कि आपके भविष्य निधि कोष में जमा होती है और उतना ही योगदान नियोक्ता द्वारा किया जाता है। पीएफ वेतन के प्रतिशत के रूप में गणना करके काटा जाता है, जैसे कि 12% और ब्याज के साथ सेवानिवृत्ति पर उसे लौटा दिया जाता है।

सार्वजनिक भविष्य निधि (पीपीएफ)

आप सार्वजनिक भविष्य निधि (पीपीएफ) खाता खोल सकते हैं और आप पीपीएफ खाते में 70,000 रुपये तक की राशि का निवेश धारा 80 सी के तहत कर सकते हैं। 500 रुपये के न्यूनतम निवेश के साथ पीपीएफ खाते आप बैंकों में या पोस्ट ऑफिस में खोल सकते हैं।

नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट (एनएससी)

जितनी भी राशि आप नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट (एनएससी) में निवेश

निवेश जो धारा 80 सी के अंतर्गत आते हैं उनकी सूची नीचे दी जा रही है, ये वित्तीय उत्पाद आपकी आवश्यकता अनुसार आपको उत्पाद चुनने में आपकी मदद करेगा –

- जीवन बीमा योजनाएँ
- यूनिट लिंक्ड बीमा योजनाएँ (यूलिप)
- इक्विटी लिंक्ड बचत योजनाएँ (इएल एस एस)
- सार्वजनिक भविष्य निधि (पीपीएफ)
- भविष्य निधि (कर्मचारी का अंशदान)
- राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्र (एन एस सी)
- पंचवर्षीय जमा खाता (फिक्स्ड डिपोजिट)
- गृह ऋण वापसी (मूलधन)
- स्टांप शुल्क और पंजीकरण शुल्क
- शिक्षण शुल्क भुगतान
- डाकघर सावधि जमा खाता
- इन्फ्रास्ट्रक्चर बांड
- वरिष्ठ नागरिक बचत योजना

करते हैं उस राशि पर धारा 80 सी के तहत छूट मिलेगीद्ध।

नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट में किए गए निवेश 6 वर्ष की अवधि के लिए निकाल नहीं सकते है। इस योजना के प्रारंभिक निवेशों से कुल अर्जित ब्याज पर भी छूट ले सकते हैं।

सावधि जमा

सावधि जमा में जमा की गई राशि अगर 5 वर्ष के लिए आयकर स्कीम में बैंक में रखी जाती है तो वह राशि धारा 80 सी के तहत कर में छूट के लिए पात्र है। यह एक ताजा संशोधन है जिसमे आपकी राशि सुरक्षित भी रहती है और आपको धारा 80 सी के तहत लाभ भी मिलता है।

गृह ऋण चुकौती (मूलधन)

गृह ऋ ण की मूलधन चुकौती धारा 80 सी के तहत छूट के लिए पात्र है7 यदि आपने एक नया घर खरीदा है और उस के लिए आवास ऋण लिया है, तो आप धारा 80 सी में उसका लाभ ले सकते हैं।

यहाँ पर ध्यान देने वाली बात है कि आवास ऋ ण की सामान मासिक किश्त (EMI) में दो घटक होते हैं - 'मूलधन' और 'ब्याज'। आपको केवल मूलधन वाले हिस्से की राशि की ही धारा 80 सी के तहत छूट मिलेगी। ब्याज वाला हिस्सा भी आयकर की छूट के लिए पात्र है पर 80 सी के तहत नहीं, वह है धारा 24 के तहत।

स्टाम्प शुल्क और पंजीकरण शुल्क

स्टाम्प शुल्क और पंजीकरण शुल्क जब नया घर खरीदते समय देते हैं उस राशि का धारा 80 सी के तहत लाभ मिलता है।

शिक्षण शुल्क

एक या दो बच्चों की शिक्षा के लिए शिक्षण फीस के रूप में भुगतान राशि आयकर से मुक्त होती है और आप धारा 80 सी के तहत इसका लाभ ले सकते हैं।

डाकघर सावधि जमा खाता

डाकघर सावधि जमा खाता विभाग द्वारा बैंकिंग की पेशकश है जो की बैंक सावधि जमा के समान सेवा है। आप किसी भी पोस्ट ऑफिस में अपना खाता खुलवा सकते हैं। डाकघर सावधि जमा खाते पर मिलने वाला ब्याज कर से मुक्त होता है।

इंफ्रास्ट्रक्चर बांड

इंफ्रास्ट्रक्चर बांड इन्फ्रा बांड के नाम से लोकप्रिय हैं। यह इंफ्रास्ट्रक्चर कम्पनियों द्वारा जारी किये जाते हैं, इसे सरकार जारी नहीं करती है। जितनी भी राशि है आप इन बांडों में निवेश करते हैं, उतनी राशि पर धारा 80 सी के तहत कर से छूट ले सकते हैं।

वरिष्ठ नागरिक बचत योजना

वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (SCSS) भारत सरकार का उत्पाद है। यह सबसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में से एक है।

60 वर्ष से ज्यादा आयु वाले व्यक्ति इस खाते खोल सकते हैं। इस योजना के तहत 5 वर्ष के लिए निवेश निकला नहीं जा सकता है। जमाकर्ता यह जमा और 3 साल के लिए बढ़ा सकता है। इस योजना में जमाकर्ताओं को 9% ब्याज मिलता है। निवेश से अर्जित ब्याज कर से मुक्त नहीं है।

HDFC DEPOSITS

INDIVIDUALS

Fixed & Variable Rates

INTEREST RATES ON DEPOSITS BELOW ₹ 1 CRORE

PLATINUM DEPOSIT PLAN (Fixed Rates only)

Rate of Interest (% p.a.)					
Period (months)	Monthly Income Plan	Quarterly Option	Half-Yearly Option	Annual Income Plan	Cumulative Option*
15	9.25	9.30	9.40	–	9.60
22	9.15	9.20	9.30	9.50	9.50
33	9.05	9.10	9.20	9.40	9.40
Minimum Amount (₹)	40,000	20,000	20,000	20,000	20,000

Explore global investment opportunities through MUTUAL FUNDS

ADJ CAPITAL INVESTMENT
Near Millennium Plaza,
Banstal, Raipur
M-9827192266

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में अतिशीघ्र

Kikki's Café

Pure Veg.

शुद्ध शाकाहारी कैफे का शुभारंभ